मूल्य : 10 रुपये प्रति
वार्षिक मूल्य : 100 रुपये

समाज विकास

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का मुखपत्र

मई २००७ | वर्ष ५७ | अंक ५

सिलीगुड़ी मारवाड़ी जनगणना एक सफल ऐतिहासिक प्रयोग

देश के प्रत्येक जिले में मारवाड़ी जनगणना हो

- मारवाड़ी सम्मेलन का आह्वान

- राष्ट्रपति कलाम सामाजिक नवचेतना अभियान का नेतृत्व करें : मारवाड़ी सम्मेलन
- भागचन्द पोद्दार : झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन अध्यक्ष निर्वाचित
- मेधावी एवं जरूरतमंद छात्र-छात्राओं को बढ़ावा दें
  - प्रह्लाद राय अग्रवाल, उच्च शिक्षा उप-समिति

True to our values.

True to our people.

True to our projects.

True to our selves.

Tomorrow happens when there is true partnership.

There are companies that only finance infrastructure. And there are Companies that also finance dreams, aspirations and hopes. SREI, an Indian multinational, belongs to the latter. More than just financial products and services, SREI excels in offering customised, flexible, reliable and cost-effective solutions. The focus clearly is on infrastructure equipment, projects and renewable energy resources through innovative financing and "true partnerships".

SREI not only enjoys a leadership position in the market today, but is also recognised as a people-centric company. This investment in human resource development and consistently acknowledging the blessings of god makes SREI a proud recipient of the Willis Harman Spirit at Work Award.

At SREI, it's the vision of tomorrow that fuels our passion. Propelling us to see tomorrow. Today.

WE MAKE TOMORROW HAPPEN.

SREI
INFRASTRUCTURE FINANCE LIMITED

Visit us at www.srei.com

ASSET FINANCING • INFRASTRUCTURE FINANCING • RENEWABLE ENERGY FINANCE • INVESTMENT BANKING • VENTURE CAPITAL • INSURANCE SERVICES

समाज विकास
मई, 2007
वर्ष 57, अंक 5
एक प्रति - 10 रु.
वार्षिक - 100 रु.
संपादक : नंदकिशोर जालान
सहयोगी संपादक : शंभु चौधरी

मारवाड़ी समाज दूध में शक्कर की तरह है

-सीताराम शर्मा
सम्मेलन सभापति

समाज विकास

1. अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का विचार मंच।
2. सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक चेतना का संवाहक।
3. समाज में फैली कुरीतियों, कुसंस्कारों को मिटाने का माध्यम।
4. समाज में संगठन के लिए सशक्त माध्यम।
5. राजस्थानी संस्कृति, कला, साहित्य व भाषा के प्रति समर्पित।
6. समाज में होने वाली सामाजिक घटनाओं, वर्जनाओं का वैचारिक संदेशवाहक।
7. भारत के कोने-कोने में फैले हुए 9 करोड़ मारवाड़ियों को शब्द प्रदाता।
8. आपकी आवाज व विचारों को देश-विदेश के कोने-कोने में बुलन्दी देने हेतु।

प्रकाशित रचनाओं से सम्पादकीय सहमति अनिवार्य नहीं है।

स्वत्वाधिकारी : अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन, 152-बी, महात्मा गाँधी रोड, कोलकाता-7, फोन : 2268-0319 के लिए श्री भानीराम सुरेका द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित तथा छपते छपते, 26-सी क्रीक रो, कोलकाता-700014 में मुद्रित।

क्रमांक

चिट्ठी आई है
पृष्ठ 4-8

सम्पादकीय
पृष्ठ - 9

उच्च शिक्षा उपसमिति...
पृष्ठ - 10

अध्यक्षीय
पृष्ठ - 11

राष्ट्रपति कलाम देश में...
पृष्ठ - 12

फटाफट जिंदगी के...
पृष्ठ - 13

नेपाल में मारवाड़ी...
पृष्ठ - 14

राजनैतिक कार्यकर्ता...
पृष्ठ - 15-16

सिलीगुड़ी मारवाड़ी...
पृष्ठ - 17-21

12वीं कक्षा के परिणाम...
पृष्ठ - 22

मातृदिवस के अवसर पर
पृष्ठ - 23-28

ये सफर मेरी पहचान...
पृष्ठ - 29

युगपथ चरण
पृष्ठ - 30-33

विविध
पृष्ठ - 34

चिट्ठी आई है

संस्कार, संस्कृति के द्वारा आदर्श राष्ट्र की कल्पना

मैं चाहता हूँ कि मेरा देश संस्कारी राष्ट्र बने। आदर्श राष्ट्र बने। मनुष्य स्वतंत्रतापूर्वक निर्भय होकर देवत्व को प्राप्त हो। भारत ऐसा राष्ट्र हो जहाँ शून्य अपराध हो।

धन से सुविधाएं मिलती हैं और संस्कार से सुख। संस्कार मिलते हैं बुजुर्ग से जुड़ने से। संस्कार का मतलब है प्रत्येक व्यक्ति आपस में प्रेमपूर्वक रहें और एक दूसरे की कमियों को स्नेहपूर्वक ठीक करें। यही भारतीय संस्कृति जिसे बुजुर्गों ने अपनी क्षमता और समझ के हिसाब से परिवार एवं राष्ट्र को दिया है इसलिए बुजुर्ग देवतुल्य हैं। अत: बुजुर्गों से जुड़ने पर ही देश के परिवारों की हजारों प्रकार की समस्या का हल होगा। परिवार, समाज एवं राष्ट्र की हजारों प्रकार की समस्या का एक ही हल है कि 90 करोड़ देशवासी 10 करोड़ बुजुर्गों से जुड़कर रहे। बुजुर्गों की सेवा एवं सम्मान का ध्यान रखे। सम्मान का अर्थ है सही-सही मापना, जो व्यक्ति जैसा है उसे उसी प्रकार जानना और स्वीकार करना। अर्थात् व्यक्ति में निहित गुण एवं दोष के साथ उसे स्वीकार करना। तभी हम सही मायने में मानव का सम्मान कर पायेंगे।

अगर हम अपने देश को संस्कारी या आदर्श राष्ट्र बनाना चाहते हैं तो बुजुर्गों को समाज में उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करायें। साथ ही समाज में धन, पद या जाति के बजाय वरिष्ठता के सम्मान की परंपरा चालू होनी चाहिए।

प्रत्येक समाज को वर्ष में एक बार वरिष्ठ नागरिक मिलन समारोह आयोजित करना चाहिए। प्रत्येक देश भक्त को नये नये कार्यक्रमों के बारे में सोचना चाहिए जिससे समाज में बुजुर्गों को सर्वोच्च सम्मान की स्थिति प्राप्त हो।

मैं चाहता हूँ कि मेरी कल्पनाशीलता का आदर्श राष्ट्र बनाने में उपयोग हो।

-अरुण अग्रवाल

मित्तल काम्प्लेक्स, गंजपारा, रायपुर

भागचंद पोद्दार

झारखंड प्रांतीय अध्यक्ष निर्वाचित

गत 15 अप्रैल को आयोजित झारखंड प्रादेशिक समिति की बैठक में श्री भागचंद पोद्दार झारखंड प्रांतीय मारवाड़ी सम्मेलन के नये अध्यक्ष निर्वाचित हुए। उन्होंने पूर्व अध्यक्ष श्री गोविन्द प्रसाद डालमिया से पदभार ग्रहण किया। उक्त बैठक में अन्य महत्वपूर्ण व्यक्तियों के साथ सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नन्दगोपाल रूंगटा भी उपस्थित थे। शीघ्र ही अधिवेशन के आयोजन का कार्यक्रम है।

वैवाहिक आचार-संहिता के संदर्भ में मैं अपनी भावना को उजागर कर रहा हूँ। आपने मारवाड़ी समाज के हित में जो नियम प्रस्तावित किये हैं, वे सराहनीय हैं। समाज तीन तरह की श्रेणी में बंटा हुआ है। (1) उच्च श्रेणी, (2) मध्यम श्रेणी, (3) साधारण श्रेणी। इसलिए ये सभी नियम एक दायरे में आते हैं। न. 2, 4, 5, 7, 8, 9 तो उचित लगता है मगर न. 3, 6 के नियम सामाजिक परिपाटी जो पीढ़ी दर पीढ़ी से चली आ रही है उसको धनी समाज, मध्यम समाज शायद ही उचित समझें। क्योंकि इसमें सभी की मान-मर्यादा जुड़ी हुई हैं, जिसको बदलना शायद ही जल्दी संभव हो। मानव सामाजिक प्राणी है तथा वह समाज के निर्धारित नियमों को ही अपने जीवनरूपी नौका की पतवार समझता है। मगर पश्चिमी सभ्यता के अधीन जो जीवन जीने में व्यस्त है उनके अनुसार भारतीय संस्कृति की चमक फीकी है, वे चाहे आज के माता-पिता ही क्यों न हों। उन लोगों की सोच में बदलाव लाना जरूरी है क्योंकि वे बच्चों सहित दिशाहीन होकर सभ्यता, संस्कृति को भूल रहे हैं। आपने **मारवाड़ी कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बने** का नारा दिया वह ठीक है। मेरी सोच सकारात्मक है नकारात्मक नहीं है। फिर भी अध्यक्ष बनने के लिए धन, बल या बाहुबल होना जरूरी है। क्योंकि राजनीति साधारण व्यक्ति के वश के बाहर की बात है। क्योंकि न तो वह धन, बाहुबल लगा सकता है और न ही समाज की सेवा कर विधायक बन सकता है। मैं स्वर्गीय देवकीनन्दन पोद्दार के सम्पर्क में भी था तथा नाम से शायद श्री सत्यनारायण बजाज न जानें मगर आमने-सामने हम दोनों जानते हैं, खैर ये मेरे व्यक्तिगत विचार हैं। क्षमा करें। मेरी हार्दिक शुभकामनायें सम्मेलन के साथ है।

-देवकीनन्दन जालान

वकीलपट्टी, सिलचर-788001 (असम)

मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन की निमंत्रण पत्रिका प्राप्त हुई। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में मारवाड़ी समाज का राजनैतिक सक्रियता के प्रति जनमानस को तैयार करने के लिए यह एक बहुत महत्वपूर्ण आयोजन है। समाज के सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ताओं का पार्टी लाइन को भुला कर इस आयोजन में भाग लेना अभिनंदनीय है।

सम्मेलन में वरिष्ठ एवं मूर्धन्य चिन्तकों के समयानुकूल संदेश से समाज का राजनीति में रुझान बढ़ेगा तथा उत्साही कार्यकर्ताओं की जागरुकता को उचित दिशा-निर्देश भी मिलेगा।

-रमेश कुमार बंग, आंध्र प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

बच्चों का भविष्य ?

मार्च 2007 के अंक में श्री मोहनलालजी तुलस्यान का लेख 'समय करेगा फैसला' पढ़ा। वर्तमान भारत वर्ष में बच्चे उचित संस्कार के अभाव में उनके भविष्य निर्माण में जो संकट का सामना कर रहे हैं, यह बात किसी से छिपी नहीं है।

इस पतन में पत्र पत्रिकाओं में एवं टी. वी. की चैनलों पर जो खुलेआम अश्लीलता, क्रूरता एवम् हल्की भाषा का प्रयोग दिखाया जा रहा है, यह एक आम बात हो गयी है। तथा जनता असंतुष्ट होकर भी, असंगठित होने के कारण इनके विरुद्ध कोई कारगर कदम उठाने में अपने को असमर्थ पा रही हैं।

अनेक सुधीजन इस विषय में अच्छे पत्र पत्रिकाओं के माध्यम से अपनी चिंता प्रकट करते रहते हैं, किंतु उनकी आवाज कुछ पाठकों तक सिमीत रह जाती है, देश के कर्णधारों तक पहुँच ही नहीं पाती। अगर आवाज पहुंचती भी है, तो वो अपनी राजनीति की आपाधापी में इन सबकी अनदेखी कर देते हैं। सत्य यह है कि समाज पर यह जो आक्रमण हो रहा है उसके विरुद्ध बीड़ा उठाने या आंदोलन करने कोई तैयार नहीं। दुषित राजनीति सारे समाज को इतनी जकड़ रखी हैं कि देश एक होनहार बालकों के अच्छे संस्कारों की बात उभर ही नहीं पा रही हैं। और भी दुख की बात है कि शिक्षित महिला वर्ग की संस्थाएं भी इस विषय में साधारण चर्चामात्र कर लेती हैं, कोई इस अन्याय के विरुद्ध जोरदार विरोध प्रकट नहीं करतीं, आंदोलन करने की बात तो दूर।

श्रीमती स्नेहलता वैद्य ने गतांक में लिखा है ''मीडिया, जिसे लोकतंत्र का प्रहरी कहा जाता है, जिसका काम है लोकशिक्षण और लोकजागरण, वही मीडिया अब निरा व्यवसाय बन गया है। वह केवल हिंसा और अपराध बेचता है। उसकी दृष्टि में बलात्कार, अपहरण, चोरी, डकैती, हत्या और अश्लीलता ही समाचार है। वह समाज को ऊपर उठाने के बजाय गिराने का माध्यम बन गया है।''

अत: जब तक जागरुक दस-बीस देशभक्त एकजुट हो, सारे होनहार बालकों के प्रति इस भयावह आक्रमण के विरुद्ध खड़े नहीं होते, दुख है, इन करोड़ों सुकुमार बालकों का भविष्य अंधकार में हैं। सुसंस्कार के अभाव में अपने यौवन काल में यह क्या बनकर अपनी जीवनयात्रा करेंगे, यह भगवान ही जानें।

भवदीय

-मोहनलाल चोखानी

विवाह सम्बन्धी जानकारी कक्ष

प. बंग प्रादेशिक मारवाड़ी सम्मेलन एवं मारवाड़ी महिला सम्मेलन, कोलकाता शाखा ने शादी-विवाह की भयंकर समस्याओं को देखते हुए ''**विवाह सम्बन्धी जानकारी कक्ष**'' लड़के-लड़कियों के जानकारी हेतु सम्मेलन के पदाधिकारियों की देख रेख में अध्यक्षीय कार्यालय 174, चित्तरंजन एवेन्यू, कोलकाता-7 में प्रत्येक बुधवार व शनिवार सायं 3 से 6 बजे के बीच कार्यरत है।

समाज विकास के मार्च 2007 के अंक का सम्पादकीय पढ़ा।

माता-पिता से बड़ा स्थान ? आपके विचारों से मैं पूर्ण रूप से सहमत हूँ। मानो आपने मन की सारी बातें कह दी हैं। सामाजिक स्तर इतना गिर चुका है कि हर घटना का व्यवसायीकरण हो चुका है। पटना कालेज के प्राध्यापक मटुकनाथ का मामला हो या फिर प्रियंवदा बिड़ला का वसीयत का मामला हो। भारत के विभिन्न टी. वी. चैनलों ने प्रोफेसर मटुकनाथ एवं उसकी शिष्या प्रेमिका को एक प्यार का प्रतीक बना दिया है। जब भी ऐसे प्रसंग आते हैं या फिर वेलेनटाइन डे की बात आती है तो उनको आदर से टी. बी. चैनेल पर बुलाकर उनके विचार लिये जाते हैं, यह समाज का दुर्भाग्य नहीं तो क्या है। टी. बी. चैनेल उस परिवार के दूसरे पहलू को कभी उजागर नहीं करते जहां मटुकनाथ की पत्नी या बच्चों पर क्या बीती है। या जिसके घर उजड़ गये हैं।

जब भी कोई डाक्टर, वकील, शिक्षक, चार्टड या आडिट फार्म अपने पेशे से जुड़ते हैं तो सबके लिये एक लक्ष्मन रेखा के साथ-साथ उस व्यवसाय की एक गोपनीयता एवं मर्यादाओं को लांधकर न केवल अपने पेशे को कलंकित करते हैं आपितु सामाजिक ताने बाने को तोड़ते हैं।

यदि रक्षक ही भक्षक बन जाये तो भगवान ही मालिक होता है। हमारे प्रचार माध्यमों को सामाजिक मुद्दों को व्यवसायी करण से दूर रखना चाहिये ताकि देश में एक स्वास्थ्य परिवेश पैदा हो सके।

भवदीय :-

-प्रदीप खदरिया

''खदरिया भवन'' देरगाँव-785614 (असम)

हम सभी भारतीय के लिए गर्व की बात है कि अमेरिका के नेवादा प्रान्त की सीनेट का सत्र वैदिक मंत्रोच्चार के बीच शुरू हुआ। हिन्दू मंदिर के निर्देशक श्री राजन जेड ने विशुद्ध भारतीय सन्त वेशभूष भगवे वस्त्र, रुद्राक्ष की माला एवं भाल पर चन्दन का तिलक लगाकर शुद्ध संस्कृति में ''ॐ सहना ववतु, सहनौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवा वहै तेजस्विना धीतमस्तु या विद्विषा वहै'' मंत्र का पाठ किया। इस अवसर पर सभी सीनेटर गण अपने स्थान पर खड़े हो गए। अमेरिका द्वारा वैदिक संस्कृति को अपनाना एक महत्वपूर्ण कदम है। हम भारतीय नेवादा प्रान्त के सभी नागरिकों को बहुत-बहुत साधुवाद एवं शुभ कामना देते हैं।

-ओमप्रकाश अग्रवाल, सेवक रोड, सिलीगुड़ी (प.बंग)

'मिलनी सबकी चार रुपया, चाँदी छोड़ कागज का रुपया'

महिला घरेलू हिंसा कानून

आपके द्वारा बड़ी कृपा पूर्वक प्रेषित 'समाज विकास' का नवीनांक, मार्च-2007 मिला। सन्दर्भाधीन ''समाज विकास'' पत्रिका के संदर्भित अंक द्वारा आपने अपने पाठकों को आमंत्रित किया है कि वे इस विचार मंच में प्रकाशनार्थ ''महिला घरेलू हिंसा कानून'' पर अपने विचार भेजें। वह पुरुष प्रधान कहे जाने वाले इस सभ्य समाज में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में न केवल मर्दों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है बल्कि कई दृष्टिकोण से तो वह उनसे भी आगे बढ़कर बड़ी जिम्मेदारियों का कार्यभार सम्भाल रही हैं। इसलिए उसे प्रताड़ित करने की आशंकायें बहुत कम रह गई हैं। बल्कि कहना चाहिए कि नारी आज भी भारी है और पुरुष उसका आभारी है। ऐसी स्थिति में प्रासंगिक कानून का औचित्य अधिक नहीं रह गया है। अब नारी अबला नहीं रह गई है बल्कि वह एक ऐसी बला बन गई है जो स्वयं को असहाय बताकर पुरुष से जमीन-आसमान एक करा सकती है। इसलिए यह कहना जरूरी नहीं रह गया है कि ''**नारी, तेरी यही कहानी, आंचल में है दूध और आँखों में पानी।**'' फिर भी आपने इस आधी आबादी के विषय को महत्व प्रदान दिया है। जिसके लिए आपको बहुत बधाई और धन्यवाद।

कथनी करनी एक हों

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन एवं इनकी शाखाओं के पूर्व व वर्तमान पदाधिकारीगण खुलेआम अपने घर की शादियों में खुले हस्त से खर्च कर रहे हैं। सर्वप्रथम सम्मेलन के पूर्व व वर्तमान पदाधिकारियों को अपनी गिरेवां में झांककर देखना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं। यह तो ''**पर उपदेश पंडित**'' वाली कहावत को चरितार्थ करती है। यदि सच में सम्मेलन शादी-विवाह में फिजुलखर्ची रोकना चाहती है तो पहले पदाधिकारियों व सदस्यों को अपने परिवार की शादियों में इसे लागू करें।

-**रामगोपाल बागला,** 33, ब्रेबर्न रोड, कोलकाता-1

समाज के प्राय: सभी नेता ने कहा कि युवकों को आगे आना चाहिए। मैं कहता हूँ **कादिप नहीं।** युवा वर्ग को बड़े बुजुर्ग के साथ चलना चाहिए। बुजुर्गों का दायित्व बनता है युवाओं को अपनी प्रतिभा को दिखलाते हुए आगे बढ़ने को प्रेरित करें। जो राजनैतिक, प्रशासनिक, तकनीक, चिकित्सक, खेलकूद इत्यादि में कैरियर बनाना चाहते हैं, को प्रोत्साहन देकर अपने भविष्य निभाने की ओर प्रेरित करें। समाज के बुजुर्ग को अपना सजग अनुभव का उपयोग करते हुए युवाओं का मार्गदर्शन तथा समाज का अनुशासित नेतृत्व करना चाहिए।

-**अशोक काजरिया,** बेनाचिटी, दुर्गापुर-13

''वैवाहिक आचार-संहिता''

(1) वर पक्ष की तरफ से जो टीका में नगदी रुपया लिया जाता है वह बन्द होना चाहिए। हमें संकल्प लेना चाहिए कि ऐसा काम न वह स्वयं करेंगे न किसी को करने देंगे।

(2) बैण्ड, सड़क पर नाच या वैवाहिक समारोह में शराब का प्रयोग हो तो ऐसी शादी का सांगठनिक विरोध करें अर्थात् उस शादी में न जाएं, हो सके तो ऐसे करने वाले को भरसक कोशिश कर उन्हें ऐसा करने से रोकें।

(3) जो आजकल साज-सज्जा, पैकिंग इत्यादि पर अत्यधिक माता में खर्चा होता है उसे कम/बन्द करना चाहिए।

(4) श्री मुरलीधर चौधरी जी के विचार ''हाई टी बन्द होना चाहिए'' से मैं पूरी तरह सहमत हूँ।

(5) सबसे पहले हमें खुद पर अंकुश लगाना होगा। हमें मारवाड़ी सम्मेलन, मारवाड़ी महिला समिति, मारवाड़ी युवा मंच या अन्य मारवाड़ी संस्थायें सभी के साथ मिलकर संगोष्ठी, कार्यशाला इत्यादि का आयोजन कर संकल्प पत्र हस्ताक्षर करवाने चाहिए।

-**श्रीमती सम्पत्ति मोदा,** कटक-753002

सादर सप्रेम हरि स्मरणम्। आपके नेतृत्व में ''**मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन**'' में शामिल होकर प्रसन्नता हुई और आपकी नेतृत्व क्षमता को देखकर अपार हर्ष हुआ।

आप इस प्रतिष्ठित सम्मेलन के 'प्रथम' ब्राह्मण अध्यक्ष बने यह भी हर्ष का विषय है। गौरव का विषय है। साथ ही जहां-जहां आप सम्मेलन कार्य हेतु प्रवास करें तो मुझे भी एक कार्यकर्त्ता की तरह साथ रख लें, कृपा होगी।-

-**महेन्द्र भगानिया 'स्वामी'**

भगानिया निवास, पो. झरिया-828111, जिला-धनबाद

अनावश्यक नेग

मार्च 2007 अंक में वैवाहिक आचार संहिता पर श्री प्रदीप खदरिया का सुझाव तथा अनेक समाज बन्धुओं के विचार पढ़े - आचार-संहिता के 9 सूत्रों पर अमल किया जाना चाहिए, कुछ अमल होना प्रारम्भ हुआ भी लगता है। मैं समझता हूँ विवाह की जो रीतियां उस जमाने में हमारे पूर्वजों ने बनायी थी वे एक पिता द्वारा पुत्री को समर्पित भाव से लाड़-प्यार सिंघारा (शृंगार) रक्षाबन्धन, तीज, गणगौर, होली, दीवाली, संक्रांति के माध्यम से स्नेहोपहार के रूप में चलायी गयी थी - उसी प्रकार नहान में रुपये नारियल हल्द दात- बान में रुपये नारियल- भातभरना आदि पिता द्वारा सहयोगात्मक रूप में नियम बने थे। परन्तु आज उनमें से अधिकांश प्रथायें अपने आप देशकाल अनुसार गौण हो गई है - कुछ का पालन हो रहा है - वे प्रासंगिक भी हैं - कुछ धीरे धीरे हटायी जायेगी। आज समय

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

बदल रहा है - लोगों में पहले जैसा प्यार-भाई परसंगी भाव घटता जा रहा है - बस प्रतिस्पर्धा बढ़ गई है। प्रतिस्पर्धा के इस वातावरण में जब व्यक्ति का मैं हावी हो जाता है तो "मैं हूं तो प्रभु तुम नहीं तुम हो तो मैं नाहीं" समर्पण, सदाचार की जगह प्रतिस्पर्धात्मक दिखावा आता है। ऐसे में "आचार संहिता" के माध्यम से आप किसी भी "नेग" पर पूर्ण अंकुश नहीं लगा सकते - यदि रचनात्मक सुधार लाना है तो अनावश्यक "नेग" ही हमें हटाने होंगे। जब नेग ही हट गया तो उस नेग की मांग स्वत: समाप्त हो जायेगी। ऐसा ही एक प्रयोग हाल ही में असम में हुआ है यथा:-

लड़के-लड़की वालों ने मिलबैठ कर लड़का, लड़की रोकने (नेगाचार) से लेकर पहरावनी/विदाई तक के नेगचार तय कर लिये। जो नेग टालने लायक थे उनको हटा दिया गया तथा बाकी नेग जो रखे गये, उन्हें सहज सरल दोनों पक्ष को स्वीकार्य बना लिया गया। नेगचार में गिन्नयों पर प्रतिबंध लगना चाहिए। समाज सबको मिलाकर बनता है - छोटी बड़ी पांचों अंगुली की भांति मिलकर ही समाज को चलना चाहिए, यही समय का तकाजा है।

-रामनिरंजन गोयनका

"शांतिनिकेतन" दिनेश गोस्वामी पथ, मालीगांव, गुवाहाटी

समाज विकास मुझे नियमित प्राप्त हो रही है।

हमारे समाज के अग्रणीय विचारशील समाज सेवियों में काफी सोच विचार कर वैवाहिक आचार संहिता बनाई है तथा पत्रिका के माध्यम से समाज के लोगों को अवगत कराने का प्रयास किया जा रहा है।

इस आचार संहिता का उद्देश्य सर्वसाधारण के लिये विवाह समारोहों को सरल तथा तनाव रहित बनाने का प्रयास है। ऐसा समझ में आया है। यह एक उत्कृष्ट प्रयास है।

इसमें कुल ९ मुख्य बिन्दुओं में सुधार का सुझाव दिया गया है। इनमें से कुछ निम्नलिखित बातों को सिर्फ माता-पिता, अभिभावक सुधार कर सकते हैं।

(१) मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़कर कागज का रुपया।

(२) सज्जन गोठ बंद हो।

(३) सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च सिर्फ वर पक्ष ही वहन करें।

अन्य कुछ बिन्दुओं पर कुछ में आंशिक तथा कुछ में पूर्ण सहयोग समर्थन तथा पहल के लिये वर तथा उसके मित्र वर्ग का समर्थन तथा सहयोग करने की समझदारी विकसित करने की आवश्यकता है। वे निम्न प्रकार हैं:

(१) पानी से पापड़ तक अधिकतम 25 व्यंजन का नियम लागू हो। इसके लिये सम-रुचिवाले विशिष्ट लोगों की सीमित उपस्थिति का समर्थन। इसमें वर तथा उसके मित्र वर्ग यदि समझ कर सुसंस्कारित हो सके तो वर तथा कन्या के पिता-अभिभावक को खुशी होगी। वे तो पुत्र की आजीवन नाराजगी के डर से बोझ बढ़ा लेते हैं फिर तनावग्रस्त होते हैं।

(२) बैंड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोह में शराब का उपयोग वर्जित हो। यह भी समरुचि सम्पन्न लोगों की उपस्थिति तथा वर के समर्थन पर निर्भर दिखाई पड़ता है।

(३) विवाह दिन में समय सम्पन्न हो जावे तो सर्वश्रेष्ठ हो सकता है। यदि उपरोक्त बातों में वर अपना निर्णय करे तो उसके अपने पिता तथा कन्या के पिता का बोझ हलका हो।

-मुरलीधर केडिया

झारसुगुडा, उड़ीसा

समाज विकास पत्रिका एक ही पत्रिका है जो घर बैठे अपना समाज के बारे जान पाते हैं. पत्रिका में ज्यादा से ज्यादा और जानकारी आए इसके लिए पेपर संख्या छपाने पर अवश्य ध्यान दें, तथा व्रत, पूजा, त्योहार के विषय अवश्य जानकारी का एक पेज में देने का व्यवस्था करें।

अशोक अग्रवाल, खेतराजपुर, सम्बलपुर

छोटे-बड़े शहरों में स्थिति अलग हैं

गत 4-5 नवम्बर को साल्टलेक कलकत्ता में सम्मेलन द्वारा चिन्तन-शिविर का आयोजन किया गया था, जिसमें अधिकांश उपस्थिति, कलकत्ते के बाहर से आये प्रान्तीय अध्यक्ष या मन्त्री बन्धुओं की थी जिन्हें इसी शिविर के लिये आमन्त्रित किया गया था। मैं इस शिविर में, विशेष कारणवश कलकत्ते के बाहर रुकने के कारण उपस्थित नहीं हो सका था। जैसी मेरी सूचना है, कलकत्ते के कई कार्यकर्ता लोग भी इसमें उपस्थित थे, किन्तु कई प्रमुख जातीय संस्थाओं के प्रतिनिधि किन्ही कारणवश, इस आयोजन में उपस्थित नहीं थे।

शिविर की समाप्ति पर, समाज सुधार विषयक एक नौ सूत्री आचार संहिता का प्रचार हुआ, जिसके अधिकांश निर्णय आमतौर पर सरल एवं सर्वमान्य हैं, यही कहना चाहिये, किन्तु इसमें छपे एक दो निर्देश ऐसे हैं, जिससे कोलकाता में बसे बृहत् समाज में भ्रम उत्पन्न होता है एवं यहां के लिये प्रासंगिक नहीं है। वैवाहिक आचार संहिता की क्रम संख्या दो (2) में लिखा है। 'पानी से पापड़ तक अधिकतम 25 व्यंजन का नियम लागू है।' कोलकाता जैसे बृहद् शहर में जहाँ लाखों राजस्थानी समाज करते हैं। वहां किसी भी विवाह लग्न पर सैकड़ों, सैकड़ों विवाह सम्पन्न होते हैं। यहाँ किसी भी सुपरिचित व्यक्ति को आठ-दस विवाह में मित्र या सम्बन्धी के यहाँ विवाह समारोह में उपस्थित रहना अनिवार्य हो जाता है।

कोलकाता में अभी तक सब के यहां यही नियम चल रहा है कि स्वागत समारोह में जो अधिकांश सायंकाल 5 से 7, या इसे 7.30 के बीच में होते हैं, उनमें आगत अतिथियोंका स्वागत गर्म या ठंडे पेय

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

पदार्थ से किया जाता है एवं कुछ स्नेक्स या मीठा ट्रे में रखकर सामने दिखाया जाता है, जिसे इच्छानुसार आगत बन्धु ग्रहण कर लेते हैं। समस्त आने वाले अतिथियों को सायंकाल न तो पूरा भोजन कराया जाता है, न किसी को असमय डीनर लेने की अभिरूचि रहती है। कलकत्ता में स्थिति यह होती है कि आनेवाले महाशय अपनी उपस्थिति दर्ज कराकर, कुछ की ठंडा-गर्म लेकर दूसरे विवाह में सम्मिलित होने हेतु भागने की तैयारी में रहते हैं, कारण कोई विवाह बालीगंज-लेकरोड, कोई पार्क स्ट्रीट-चौरंगी, तो कोई काकुड़गाछी या कोई हवड़ा में होता है। अत: एक व्यक्ति को दो घण्टा में सड़क जाम पार कर, सारे विवाह समारोह में उपस्थित होना कितना दुस्कर कार्य है, यह सभी जानते हैं। अत: कलकत्ता में यह बीस या २५ व्यंजन की बात लागु ही नहीं होती।

कलकत्ते के बाहर छोटे-बड़े शहरों में स्थिति दूसरी है। वहां सायंकाल के लगन में प्राय: फेरे हो जाते हैं, जिसमें अपने परिवार के सदस्य शामिल रहते हैं। इसके पश्चात शहर के परिचित मित्र बन्धु, अपनी अपनी दुकान या कार्यालय का कार्य निपटाकर रात्रि ८॥ ९ के बाद ही समारोह में शामिल होते हैं, और वहाँ पूरा भोजन-डीनर स्वच्छन्दता से ग्रहण करते हैं। निमन्त्रण पत्र में भी स्वागत समारोह का समय देर का ही लिखा जाता है। अत: यह व्यंजन की सीमा आदि, केवल बाहर गाँव के लिये उपयोगी है, कलकत्ता-बम्बई का इससे कोई वास्ता नहीं है। अत: इस निर्देश को भिन्न रूप से स्पष्ट करना चाहिये। अन्यता कलकत्ता - बम्बई के समाज के लोगों के लिये एक भ्रम की सृष्टि का कारण बन जाता है।

दूसरे क्रमांक (5) पाँच में लिखा है "सज्जनगोठ बन्द हो।" इस निर्देश का कोई अर्थ नहीं होता और न मानना चाहिये कि इससे कोई सुधार हो गया। सज्जनगोठ का मायने हैं कि आगत अतिथियों का स्वागत कर, लड़के वालों का अपने परिवार या निकटतम सम्बन्धीयों के साथ भोजन को बैठना। अपने पितृदेवों को पहले प्रसाद लगाकर वर पक्ष के अतिथि भोजन ग्रहण करते हैं।

अत: इसे बन्द करने का निर्देश कोई अर्थ नहीं रखता, इसमें सुधार कर लेना चाहिये।

-मोहनलाल चोखानी
"गोकुल" राजलक्ष्मी मार्ग, सिविल लाईन्स
नागपुर-440001

टिप्पणी : चिन्तन शिविर में सभी निर्णय आम सहमति के आधार पर सर्वभारतीय संदर्भ में लिये गये हैं। प्रांतीय पदाधिकारियों के अतिरिक्त कोलकाता से बड़ी संख्या में सामाजिक कार्यकर्त्ता एवं जातिगत संस्थाओं के प्रतिनिधि उपस्थित थे। व्यक्तिगत विचारों का स्वागत है

महामंत्री
अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

लघुकथायें

लम्बा सफ़र

शाह अशरफ अली बहुत बड़े संत थे। एक बार वे सहारनपुर से रेलगाड़ी द्वारा लखनऊ के लिए चले। सहारनपुर स्टेशन पर उन्होंने अपने शिष्यों से कहा कि सामान तुलवा लें और अधिक होने पर उसका किराया अदा कर दें।

उस गाड़ी का गार्ड भी पास ही खड़ा था। यह सुनते ही वह बोला, "सामान तुलवाने की कोई आवश्यकता नहीं। मैं साथ चल रहा हूँ।" गार्ड भी उनका चेला था।

शाह अली ने चकित हो कर उससे पूछा, "तुम कहां तक जाओगे?"

"मैं बरेली तक जा रहा हूं, परंतु आप सामान की चिंता न करें।" गार्ड बोला।

"मगर मुझे तो और आगे जाना है।" शाह ने कहा।

"मैं दूसरे गार्ड से कह दूंगा। वह लखनऊ तक आपके साथ जाएगा।"

"फिर आगे क्या होगा?" शाह अली ने पूछा

"आप लखनऊ तक जा रहे हैं, वह भी लखनऊ तक आप के साथ जाएगा।" गार्ड ने उत्तर दिया।

"बरखुरदार! **मेरा सफ़र बहुत लंबा है।**" शाह ने गंभीर हो कर कहा।

"तो क्या आप लखनऊ से भी आगे जा रहे हैं?"

अभी तो केवल लखनऊ तक जा रहा हूं, परंतु जिंदगी का सफ़र बहुत लंबा है। वह खुदा के पास जाने पर ही समाप्त होगा। वहां पर अधिक सामान का किराया न देने के अपराध से मुझे कौन बचाएगा?

गार्ड बहुत लज्जित हुआ। शाह अशरफ़ अली के शिष्यों ने सामान तुलवाया और अधिक सामान का किराया अदा कर दिया। ●

विशाल हृदय

संत आलवार अपनी आवश्यकताओं को न्यूनतम रखते थे। उन की झोंपड़ी भी इतनी ही बड़ी थी कि उसमें केवल एक आदमी सो सकता था।

एक दिन भारी वर्षा हो रही थी, रात का समय था। चारों ओर अंधकार था। अचानक किसी ने दरवाजा खटखटाया। संत आलवार ने दरवाजा खोला- एक आदमी गीले कपड़ों में लिपटा खड़ा जाड़े से थर थर कांप रहा था। वह रास्ता भटक गया था। उसने कहा कि वह रात भर के लिये आश्रय चाहता है, सुबह चला जाएगा।

संत ने कहा, "अंदर आ जाओ। मेरी कुटिया में एक आदमी सो सकता है, परंतु दो बैठ सकते हैं। हम लोग बैठ कर रात काट लेंगे।

वह आदमी अंदर आ गया और संत ने दरवाजा बंद कर दिया। थोड़ी देर में फिर दरवाजे पर दस्तक हुई।

संत ने दरवाजा खोल कर देखा- एक आदमी पानी से तर बतर खड़ा है और जाड़े से कांप रहा है। उसने भी निवेदन किया कि उसे रात बिताने की जगह मिल जाए तो वह सवेरे चल देगा।

संत आलवार ने कहा, "कुटिया तुम्हारी ही है। मजे में रात बिताओ। इस कुटिया में एक आदमी सो सकता है या दो बैठ सकते हैं, या तीन आदमी खड़े रह सकते हैं। अंदर आ जाओ। हम तीनों खड़े खड़े रात बिता सकते हैं।" ●

संगठन में ही शक्ति है, राष्ट्रीय एकता में हमारी भक्ति है।

संपादकीय

क्या समाधान होना चाहिए ?

मारवाड़ी समाज में पूर्वजों ने कई धर्मशालायें, गौशलाएं, चिकित्सालय, शिक्षालय, पुस्तकलाय की स्थापना की थी। उत्तर-पूर्व भारत में इसकी संख्या हजारों में आंकी जा सकती है। दक्षिण भारत में भी कई स्थानों पर इस तरह की व्यवस्था की गयी थीं, समाज के बड़े-बुजुगों ने मिलकर इन संस्थाओं की स्थापना की थी, परन्तु आज कई जगह ऐसे प्रमाण मिलने लगे हैं कि परिवार के जो लोग स्थायी ट्रस्टी होते हैं, वे लोग रख-रखाव के अभाव में अपने पूर्वजों की धरोहर को औने-पौने दाम में बेचकर उस धन को अपने व्यवसाय में लगा रहे हैं। इस तरह के उदाहरण समाज में दिन-प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं। खरीदने व बेचने वाले दोनों ही सामाजिक मर्यादाओं को ताक पर रख कर अपना लाभ देखने में लगे हैं। मारवाड़ी समाज इस क्रम में सबसे अग्रिम पंक्ति में नजर आता है। कारण की इस समाज ने आज से 100-200 वर्ष पूर्व जो सम्पत्ति-धर्मशालाओं या अन्य कार्य हेतु दान दे दी थी, आज उनके बच्चे दान में दी गयी जगह का व्यवसायीकरण कर रहे हैं। प्रश्न उठता है कि समाज क्या चुपचाप इनकी इस व्यवस्था को स्वीकार कर ले या इसके खिलाफ एक मत होकर ऐसी संस्थाओं का किसी ट्रस्ट के अन्तर्गत अधिग्रहण कर लिया जाना चाहिए। यह हमें विचार करना चाहिए।

दूसरी बात यह कि जो लोग ट्रस्ट में दान दी गयी संस्था को बेचकर या व्यवसायीकरण कर रहे हैं, वे दोनों व्यक्ति समाज की नजर में अपराधी करार दिये जाने चाहिए या नहीं, यह समाज के सामने एक महत्वपूर्ण प्रश्न बनता जा रहा है। जहाँ समाज को इस विषय पर गम्भीरता से विचार करना होगा। वहीं समाज के बीच ऐसे कई संगठन हैं जो धीरे-धीरे सारे देश में काफी शक्तिशाली हो चुके हैं, नि:संदेह इसमें प्रथम पंक्ति में अखिल भारतीय स्तर पर किसी एक या दो संस्थाओं का चयन करना चाहिए जो मारवाड़ी समाज के ऐसे ट्रस्ट जो रख-रखाव के अभाव में बेकार पड़े हों या उसके ट्रस्टी असमर्थ हो चुके हों या कई ट्रस्टी नहीं रहे और उनकी जगह खाली पड़ी हों, ऐसी संस्थाओं की तरफ ध्यान देकर इसके व्यवसायीकरण को रोकने का प्रयास करें तो क्या समाज उसे इसकी मान्यता प्रदान करेगा ? और यदि प्रदान करे तो राष्ट्रीय स्तर पर ऐसी संस्था का चयन कौन करें, यह प्रश्न भी उभर कर सामने आयेगा।

बड़े शहरों में तो कई संस्था ट्रस्टी के अभाव में बेकार सी हो गयी है, परन्तु जो बचे हुए ट्रस्टी हैं वे भी नहीं चाहते कि नये लोगों को खाली स्थान पर लायें, धीरे-धीरे वे खुद भी असमर्थ हो जाते हैं एवं संस्था कुछ ऐसे लोगों तक सिमट कर रह जाती हैं, जिसे दान में दी गयी सम्पत्ति से कोई मानसिक लगाव नहीं रह जाता। इस तरह के लोग उस स्थान को बेच कर या भाड़े पर लगाकर व्यक्तिगत लाभ लेने में लगा देते हैं, समाज को इस पर विचार करना चाहिए कि ऐसी स्थिति में क्या समाधान होना चाहिए ?

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

उच्च शिक्षा उप-समिति की बैठक में

महत्वपूर्ण निर्णय

प्रह्लाद राय अग्रवाल

हरिप्रसाद बुधिया

विश्वम्भर दयाल सुरेका

सज्जन भजनका

हरिकृष्ण चौधरी

गत 5 मई 2006 को अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन की उच्च शिक्षा उप-समिति की बैठक श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल की अध्यक्षता में उनसे कार्यालय में सम्पन्न हुई इस बैठक में कई महत्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

यह तय किया गया कि बिजनेस मैनेजर, कानून, तकनीकी उच्च शिक्षा के लिये समाज के मेधावी एवं जरूरतमन्द छात्र-छात्राओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जानी चाहिये।

बैठक में श्री सज्जन भजनका, श्री हरिकृष्ण चौधरी, श्री विश्वम्भर दयाल सुरेका, श्री रतन शाह आदि ने महत्वपूर्ण सुझाव एवं प्रस्ताव दिये।

सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा ने उच्च शिक्षा कोष की रूपरेखा प्रस्तुत की एवं लोन स्कालरशिप तता ग्रान्ट स्कालरशिप दोनों का प्रस्ताव रखा।

एक चयन समिति का गठन किया गया जिसके सदस्य हैं **श्री हरिकृष्ण चौधरी, श्री सज्जन भजनका, श्री आर. के. अग्रवाल,** एवं **श्री वासुदेव टिकमानी।** सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा एवं उच्च शिक्षा उप-समिति अध्यक्ष श्री प्रह्लाद राय अग्रवाल पदेन सदस्य रहेंगे।

उच्च शिक्षा उप-समिति के कार्यकाल की सहयोग प्रदान करने के लिये श्री सरोज श्रीवास्तव एवं श्री प्रदीप अग्रवाल की सहायता लेने का प्रस्ताव रखा गया।

विवाह में सादगी बरतें।

अध्यक्षीय

देश के प्रत्येक जिले में मारवाड़ी जनगणना हो

मारवाड़ी सामाजिक क्रांति परिषद ने गत रविवार २० मई २००७ को मुझे जनगणना पुस्तिका के विमोचन के लिये सिलीगुड़ी आमंत्रित किया। समाज द्वारा निर्मित पांच सितारा होटल की तरह भव्य उत्तर बंग मारवाड़ी भवन में आयोजित विशाल कार्यक्रम सचमुच हर मायने से सफल महत्वपूर्ण एवं प्रेरक था। मंच पर मेरे साथ केवल सिलीगुड़ी ही नहीं बल्कि पूरे उत्तर बंगाल का प्राय: सम्पूर्ण राजनैतिक नेतृत्व राज्य के नगर विकास मंत्री श्री अशोक भट्टाचार्य, लोकसभा सांसद श्री दावा नर्बूला, राज्य सभा सांसद श्री सूरज पाठक, मेयर प्रो. विकास घोष आदि के रूप में उपस्थित था। यह समाज की बढ़ती पकड़ एवं महत्ता का द्योतक था।

परिषद के बुजुर्ग एवं कर्मठ अध्यक्ष श्री रामकिशन गोयल एवं सक्रिय सचिव श्री किशन गोयल के अनुसार नगर में जनगणना का कार्य जब हाथ में लिया गया तो इतना उत्साह नहीं था। लेकिन जैसे-जैसे कार्य आगे बढ़ा समाज का समर्थन तथा सहयोग भी बढ़ता गया। एक लाख छ: हजार समाज के लोगों के सम्बन्ध में सीधी जानकारी प्राप्त कर पुस्तिका में प्रकाशित की गयी है। इतने कठिन परिश्रम एवं प्रत्येक सावधानी के बावजूद १०-१५ हजार नाम छूटे बताये गये। सिलीगुड़ी की आबादी करीब ५ लाख बतायी जाती है, जनगणना के बाद अब विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि मारवाड़ियों की जनसंख्या करीब १ लाख २० हजार के आस-पास है यानि २२ से २५ प्रतिशत। नगर के पूरे समाज को पुस्तिका रूप एक माले में पिरोने का अद्‌भुत् कार्य परिषद ने किया है।

जनगणना सिर्फ संख्या ही नहीं है। यह आपको एक-दूसरे से जोड़ती है, संगठित करती है। आपको अपनी ताकत का अन्दाज देती है। आपके समाज के आईने का काम करती है-कितने डाक्टर हैं, कितने वकील हैं। सिलीगुड़ी जनगणना की एक और खूबी थी-वृहत मारवाड़ी समाज-सभी जाति-वर्गों को शामिल करना।

विमोचन समारोह में समाज की बड़ी संख्या में उपस्थिति एवं उनका उत्साह दोनों देखने को बनता था। केवल मारवाड़ी समाज में ही नहीं अन्य समाजों में भी इस कार्यक्रम की चर्चा थी। पुस्तिका का मुद्रण भी बहुत सुन्दर हुआ है। बताया गया कि जनगणना के कार्य एवं पुस्तिका के प्रकाशन में करीब ६ लाख रुपयों का खर्च आया लेकिन समाज का सहयोग उससे कहीं अधिक रहा।

हमारा उद्देश्य जनगणना से कोई अपनी शक्ति का प्रर्दशन करना नहीं है। न ही हम कोई राजनैतिक लाभ इससे उठाना चाहते हैं। अपने गाँव-देश से दूर हम इसके माध्यम से एक दूसरे से परिचित होकर नजदिक आना चाहते हैं। संगठन के माध्यम से हम एक दूसरे की आर्थिक सामाजिक, शैक्षणिक एवं सांस्कृति उन्नति एवं प्रगति में भागीदार एवं सहयोगी बनना चाहते हैं।

देश में कितने प्रवासी मारवाड़ी है। कहाँ-कहाँ बसे हैं। इस सम्बन्ध में कोई निश्चित आंकड़े उपलब्ध नहीं है। जनगणना इसमें हमारी मदद कर सकती है। **अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन** आपने प्रांतीय एवं जिला सम्मेलनों के माध्यम से आह्वान करता है कि सम्मेलन देश के प्रत्येक जिले में मारवाड़ी जनगणना का कार्य हाथ में ले। इस कार्य में समाज की कोई भी संस्था हमारी सहभागी एवं सहयोगी बन सकती है। सिलीगुड़ी की **मारवाड़ी सामाजिक क्रांति** परिषद का यह अनूठा एवं सफल प्रयोग हमारे लिये एक अनुकरणीय उदाहरण के रूप में प्रस्तुत हुआ है।

आपका

सीताराम शर्मा

(सीताराम शर्मा)

न खाता सही, न बही सही, जो मारवाड़ी कहे, वही सही।

मारवाड़ी सम्मेलन प्रतिनिधिमण्डल की अपील

राष्ट्रपति कलाम देश में सामाजिक नवचेतना अभियान को नेतृत्व प्रदान करें

भारत के राष्ट्रपति डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम से 16-17 मई 2006 को कोलकाता यात्रा के दौरान अपील भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के सभापति श्री सीताराम शर्मा के नेतृत्व में एक 4 सदस्यीय प्रतिनिधि मण्डल ने साक्षात्कार किया। दल में सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष मोहनलाल तुलस्यान, राष्ट्रीय महामंत्री रामअवतार पोद्दार एवं राष्ट्रीय संयुक्त महामंत्री अरुण गुप्ता शामिल थे।

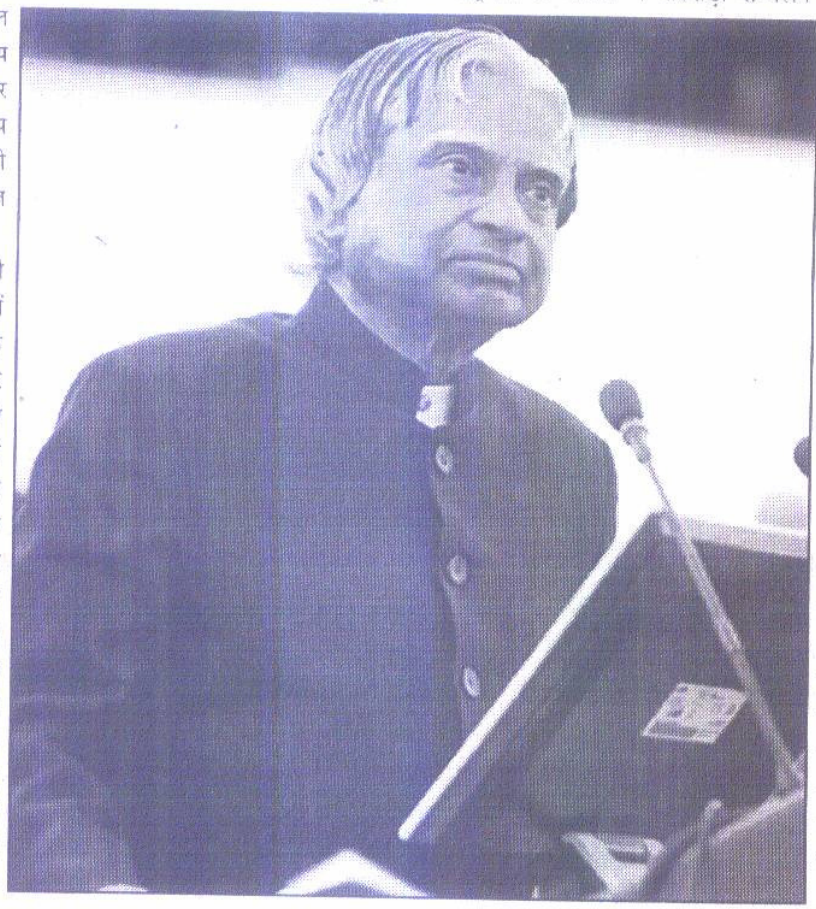

मारवाड़ी सम्मेलन ने देश में गिरते सामाजिक नैतिक मूल्यों पर चिन्ता व्यक्त करते हुए राष्ट्रपति श्री कलाम से अपील की कि वे राष्ट्रीय स्तर पर सामाजिक नवजागरण अभियान को नेतृत्व प्रदान करें। अध्यक्ष श्री शर्मा ने उनसे कहा कि इस नेतृत्व के लिये आप से उपयुक्त और कोई व्यक्ति आज देश में नहीं है। आपकी प्रतिष्ठा एवं लोकप्रिय स्वीकृति सबसे अधिक ऊँचाई पर है। देश के 75 प्रतिशत लोग आपको पुनः राष्ट्रपति के रूप में देखना चाहते हैं। आप पुनः राष्ट्रपति बने या नहीं बने इसके ऊपर उठकर देश का युवा वर्ग आपको पथ प्रदर्शन के रूप में देखता है।

राष्ट्रपति श्री कलाम ने कहा कि उनकी युवा वर्ग से ढेर-सारी अपेक्षाएं हैं एवं उन्हें विश्वास है कि वे भारत के नव-निर्माण एवं उसे 2020 तक एक महान देश बनाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभायेंगे।

राष्ट्रपति श्री कलाम ने मारवाड़ी सम्मेलन को समाज-सुधार कार्यक्रम में गहरी रूचि दिखाई। श्री शर्मा ने उन्हें पिछले सात दशकों में किये गये कार्यों की संक्षिप्त जानकारी देते हुए सम्मेलन की पर्दाप्रथा, बालिका शिक्षा, विधवा विवाह, मृत भोज, विवाहों के सादगी आदि समाज सुधार के कार्यों का उल्लेख किया। प्रतिनिधि मण्डल ने 'समाज विकास' की प्रतियां एवं पूर्व राष्ट्रपति डा. शंकर दयाल शर्मा द्वारा सम्मेलन की हीरक जयंती समारोह में अवसर पर दिये गये अभियान की प्रकाशित पुस्तिका भेंट की। पूर्व सभापति की मोहनलाल तुलस्यान की नवरचित पुस्तक चिन्तन के कुछ क्षण की एक प्रति भी राष्ट्रपति जी को पेश की गयी।

राष्ट्रपति का पुस्तक प्रेम जग-जाहिर है। उन्होंने सभी पुस्तकों एवं प्रकाशनों को बड़ी प्रेमपूर्वक ग्रहण किया एवं ध्यानपूर्वक पन्ने उलटे।

फटाफट जिन्दगी के नुस्खों का परित्याग करें

राम अवतार पोद्दार, महामंत्री, अ.भा.मा. सम्मेलन

मारवाड़ी समाज में दिनोदिन गरहा रही जिन समस्याओं को लेकर अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन के मंच से हम लगातार आम समाज को सचेत करते रहे हैं, सामाजिक-पारिवारिक व्यवस्था में बदलाव की बात करते रहे हैं, उनकी अनदेखी-अनसुनी करने का नतीजा सामने आने लगा है। उच्छृंखल होती युवा पीढ़ी के गलीज कारनामों से समाज की छवि धूमिल होने लगी है।

भूमंडलीकरण, उदारीकरण और बाजारवाद के बढ़ते प्रभाव से वैश्विक स्तर पर जिस नई सामाजिक-पारिवारिक संस्कृति का विकास हुआ है उसमें अपनी परंपरा, संस्कृति और समाजिक-बोध को बचाए रखना बहुत बड़ी चुनौती है। नई संस्कृति के पहरूए अपनी पूरी ताकत से पुरानी संस्कृति पर धावा बोल चुके हैं। उनके इस संग्राम में मीडिया पूरी तरह साथ हैं। सैकड़ों चैनल, हजारों पत्र-पत्रिकाएं नई संस्कृति की चारण-गाथा ही प्रस्तुत कर लोगों के दिलोदिमाग में हलचल मचाए हुए हैं।

कृत्रिमता से परिपूर्ण इस नई संस्कृति ने यह धारणा बना दी है कि जीवन में पैसा ही सब कुछ है। रिश्ते-नाते, बात-व्यवहार, संगी-साथी सब पैसे के यार हैं। पैसा कैसे कमायें और किस तरह खर्च करें इसकी कोई निश्चित रूपरेखा नहीं बनायी गई है। सिर्फ पैसा कमाना और 'खाओ, पीयो, मौज करो' को जीवन का आदर्श मानना ही मुख्य बात हो गई है और इसके लिए 'इजीमनी' कमाने के सैकड़ों तरीके ईजाद किये गये हैं।

'इजीमनी' का यह भूत सर चढ़कर बोल रहा है। 'मेहनत की कमाई में उतनी समृद्धि नहीं जितनी इजी मनी का कमाई से संभव है' ऐसा सोचकर लोग पागल की तरह इजीमनी के पीछे भाग रहे हैं। कुछ लोग इजी मनी कमाकर रातोंरात धन्ना सेठ भले बन गये हों पर अधिकांश लोगों ने तो इसके चक्कर में अपनी रही-सही सम्पत्ति भी गंवा दी है।

दूरदर्शन, अखबार, पत्रिकाएं इजीमनी से सम्पन्न हुए लोगों को बार-बार प्रचारित-प्रसारित करके एक ऐसा माहौल तैयार कर चुके हैं कि अपना सर्वस्व लुटा चुके लोगों की ओर देखने की जहमत भी कोई उठाना नहीं चाहते।

यह इजीमनी का ही प्रताप है कि मेहनत-मशक्कत से लोग, खासकर युवा वर्ग, दूर भाग रहे हैं। हाथ पर हाथ धरे वे किसी चमत्कार की आशा में जुआरियों की तरह दाव पर दाव लगाये जा रहे हैं। दाव लग गया तो ठीक वरना भिखारी बनने की नियति तो तय है।

मारवाड़ी समाज के युवाओं में भी इजीमनी का आकर्षण व्याप्त है भले ही वे सम्पन्न पारिवारिक पृष्ठभूमि से ही क्यों न हों। कोलकाता में पिछले दिनों कई ऐसे समाचार समाज के युवाओं से संबंधित सुर्खियों में रहे जो गलत आदतों और बुरी संगति के परिणामस्वरूप घटित हुए और समाज को पीड़ित करने वाले थे। आजकल के युवा अपने पुरखों द्वारा स्थापित सामाजिक-पारिवारिक मानदंडों की धज्जियां उड़ाने में ही अपना बड़प्पन समझते हैं। वे एक अनुशासन में रहकर धन कमाने और उसके सदुपयोग से जीवन संवारने की नीति में विश्वास नहीं करते। आज के युवाओं को धन चाहिए, अकूत धन ताकि वे बेहिसाब खर्च कर सकें। लेकिन धन कमाने के साधनों की व्यवस्था करने से वे कतराते हैं।

युवाओं में संस्कार की कमी भी इसका एक कारण है। जिस तरह से युवाओं में शिक्षा का चलन बढ़ा है उसके अनुपात में संस्कार में कमी आई है। आज की भागमभाग भरी जिन्दगी और एकाकी जीवनशैली में संस्कार देने वाले लोगों की भी कमी है। माता-पिता भी बच्चों को संस्कार देने में विफल हो रहे हैं। अतएव दूरदर्शन के नव-संस्कृति प्रचारक चैनल और अनजाने दोस्तों की सोहबत ही युवाओं के साथी रह गये हैं।

मारवाड़ी समाज की छवि के लिए इस तरह की घटनाएं चिन्ताजनक है। यह इस बात का सूचक है कि सामाजिक क्षेत्र से जुड़े तमाम लोग तत्काल सक्रिय हों और पतनोन्मुख सामाजिक संरचना में सुधार की आंधी चलायें। सुधार की यह प्रक्रिया बड़ी जटिल होगी क्योंकि लोग आसानी से व्यवस्था को बदलने वाले नहीं हैं लेकिन दबाव बनाकर उन्हें झुकने को बाध्य तो किया ही जा सकता है।

पुराने लोग एक कहावत कहा करते थे-**'हर चमकता सामान सोना नहीं होता'** और आज भी यह सच है। फर्क इतना है कि पहले लोग चमकती चीजों की असलियत जानना चाहते थे और आज चमक के पीछे दीवाना हो जाते हैं। चमक-दमक की जिन्दगी जीने की लालसा ने कितने घरों को अंधकार के गर्त में डुबो दिया है।

फिर ऐसी चमक का क्या फायदा जो अंदर ही अंदर हमें खोखला कर दे। हमारी मानसिक स्थिति को असंतुलित कर दे।

आइए हम सब मिलकर इसे एक चुनौती के रूप में स्वीकार करें और अपने परिवार एवं समाज की खातिर फटाफट जिन्दगी के नुस्के का परित्याग करें।

बहु नहीं बेटी है, परायी नहीं अपनी है।

नेपाल में मारवाड़ी आतंकित

पिछले कुछ महीनों मे हुई अपहरण एवं फिरौती की घटनाओं ने दक्षिण नेपाल के व्यापारियों विशेषकर मारवाड़ी समाज में भय एवं आतंक का वातावरण पैदा कर दिया है। नेपाल से पूँजी के पलायन के समाचार मिल रहे हैं।

Marwaris eye base outside Nepal

Abduction Fear Forces Many To Stay Incommunicado

TIMES NEWS NETWORK

Kathmandu: The ever-busy phone of Nepal's catering legend BP Sharma, is mostly silent these days. His family too are equally reluctant to part with his number for fear he may be kidnapped for ransom.

Since the fall of King Gyanendra's government last year, Nepal's mostly Indian Marwari community has been living in dread. Stung by a series of extortion demands and other threats, most now prefer moving their capital out of the country to safer shores like India, China or Dubai.

"You can't trust anyone these days," Sharma's wife says, highlighting the fear psychosis in people's minds over the threats and extortion calls that have made their lives a living hell in Nepal.

To enter well-to-do Marwari homes today is to take lessons in patience. For his own safety, an affluent Marwari industrialist now insists on keeping the huge fortress-like gate of his house locked even in the day. A smaller side-gate is opened to let visitors in only after their name is jotted down and a quick call to the house reveals that he may be let in.

"We are extremely helpless," says Prakash Dugar, a scion of Murshidabad's well-known zamindar family doing business from Nepal for over three decades.

Dugar says: "I have been urging people to write to the Prime Minister and foreign ministry describing the trials they have been through. But no one is willing. Further, the police is utterly inefficient. Most crimes point at their involvement."

Though the new eight-party government formed with Maoists as partners has said it was planning to increase patrols in areas where Marwaris live, BP Sharma's partner Shiv Kumar Sarawagi was kidnapped in his car on Tuesday. Released on Thursday only after a ransom was paid, Sarawagi is so traumatised that he has not stepped out of his house since then.

Marwaris say what shocks them is the stony silence in Nepal's media. Eleven days ago, when Murali Prasad Singh, superintendent of a south Nepal medical college was abducted, the media kept writing about it to seek his release. Earlier, when a Nepali hotelier was abducted by Maoists, the business community got a written assurance from the government that it would not happen again.

"But every second day a Marwari is being kidnapped and nobody cares," says a Marwari businessman whose son was kidnapped in January. "Though most Marwaris have been living here for generations and are Nepali citizens, they are still seen as outsiders."

Unable to take the pressure any longer many Marwaris have started shifting base. Recently at least two garments moguls shifted to Kolkata and Delhi after their factories closed down due to labour trouble. A steel magnate has also shifted to real estate business in Kolkata and Delhi. They have been buying property in Delhi, Orissa, Rajasthan and Dubai. But as it is illegal for Nepalis to invest outside Nepal, the deals are done clandestinely using a Indian relative's name.

Marwaris are also pulling their families out. A businessman, who also heads an association in Kathmandu, recently went to India to admit his children in schools there. The principal of a [illegible] area secondary school said that at least six to seven parents have asked for transfer certificates.

BURNING RAGE: A cop kicks a burning tyre during a protest by Nepalese businessmen against harassment by Maoist cadres in Kathmandu. Marwaris have borne the brunt of the increasing law and order breakdown in Nepal

व्यापारियों द्वारा पुलिस की असफलता एवं अकर्मण्यता की शिकायत बढ़ रही है। सुरक्षा के लिये घरों पर बड़े लोहे के दरवाजे लगाये जा रहे हैं।

आठ-दलों की सरकार ने सुरक्षा बढ़ाने का आश्वासन दिया है लेकिन अपहरण की घटनाओं में कमी नहीं आयी है। पिछले महीने शिवकुमार सरावगी का अपहरण हुआ एवं पता चला है कि बड़ी फिरौती के भुगतान के बाद ही उसे रिहा किया गया।

आश्चर्य की बात है कि नेपाल के समाचार पत्र इन खबरों पर चुप्पी लगाये बैठे हैं। मारवाड़ियों के अपहरण के समाचार प्रकाशित नहीं किये जाते जबकि अन्य छोटी-छोटी घटनाओं को उछाला जाता है।

जो मारवाड़ी यहां की पीढ़ियों से रहते आये हैं एवं नेपाली नागरिक है उन्हें 'बाहरी' समझा जाता है। उनके कारखानों एवं कार्यालयों में श्रमिक आन्दोलन बढ़ रहे हैं एवं कई कारखाने बन्द हो गये हैं। हाल ही में दो बड़े कपड़ा व्यापारी अपना व्यवसाय बन्द कर कोलकाता एवं दिल्ली चले गये हैं। मारवाड़ी अपने बच्चों की स्थानीय स्कूलों से निकालकर बाहर भेज रहे हैं। मोटे बादल क्षेत्र से एक विद्यालय से छः-सात छात्रों ने ट्रान्सफर सर्टिफिकेट लिया है।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन नेपाल में वर्तमान स्थिति से चिन्तित है एवं सरकारी स्तर पर सम्मेलन ने मामले को उठाया है।

असम : राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलन

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन का यह मानना है कि आज देश की राजनीति में मारवाड़ी समाज द्वारा सक्रिय भूमिका निभाने की आवश्यकता है। हमें समाज की राजनैतिक चेतना एवं शक्ति को और भी अधिक सशक्त करना है। सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा ने समाज में राजनैतिक चेतना जागृत करने की अपील करते हुए "कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बने" का नारा दिया है। इस कार्यक्रम को आगे बढ़ाने हेतु राष्ट्रीय कार्यकारिणी समिति ने एक राजनैतिक चेतना उप-समिति का गठन किया है। इस दिसा में प्रयास के पहले चरण के रूप में विभिन्न राज्यों में प्रांतीय स्तर पर एवं तत्पश्चात राष्ट्रीय स्तर पर मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किये जायेंगे।

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन ने भी इस दिशा में कदम बढ़ाते हुये सक्रिय राजनैतिक कार्यकर्ता एवं सम्मेलन के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री ओंकारमल अग्रवाल को संयोजक नियुक्त किया है। विस्तृत जानकारी हेतु आप इनसे सम्पर्क कर सकते हैं। उनका पूर्ण पता नीचे उल्लेखित है।

उक्त कार्यक्रम में अधिक से अधिक भागीदारी के लिये आप सभी शाखा पदाधिकारियों से अनुरोध है कि अपने क्षेत्र के सभी वर्तमान एवं भूतपूर्व मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ताओं से संलग्न विचरण पत्र भरवा कर सम्मेलन के राष्ट्रीय कार्यालय एवं प्रादेशिक कार्यालय को प्रेषित करें। इन विवरण पत्रों की प्राप्ति के बाद पूर्वोत्तर स्तर पर जून माह में। एक मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन आयोजित किया जायेगा, जिसमें पूर्वोत्तर मारवाड़ी समाज के वर्तमान एवं भूतपूर्व सांसदों, विधायकों, पार्षदों एवं मान्यता प्राप्त राजनैतिक दलों के मारवाड़ी पदाधिकारियों को आपसी, बातचीत एवं नीति निर्धारण के लिये आमंत्रित किया जायेगा तथा इस वर्ष के अन्त तक दिल्ली में एक राष्ट्रीय स्तर पर सम्मेलन आयोजित किया जायेगा। सभी प्रांतों द्वारा प्रेषित राजनैतिक कार्यकर्ता सूची के आधार पर सभी को दिल्ली आमंत्रित किया जायेगा।

यह सम्मेलन का एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है जिसकी सफलता आप सभी के सहयोग एवं समर्थन पर निर्भर है।

आदर सहित

आपका

विजय कुमार मंगलूनिया

प्रादेशिक अध्यक्ष

श्रीं ओंकारमल अग्रवाल, संयोजक
पूर्वोत्तर मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्ता सम्मेलन
C/o ARZEE Securities, House No. 97, 2nd Floor,
B.K. Kakati Road, Near Police Head Querter
Ullubari, Guwahati, (M) 94351-68386

सभी मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं से सादर निवेदन

(देश की राजनीति में मारवाड़ी समाज की सशक्त भागीदारी एवं चेतना हेतु अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन द्वारा विभिन्न प्रांतों में राज्य स्तर पर मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ता सम्मेलनों के आयोजन का कार्य हाथ में लिया है। वर्ष के अन्त तक राष्ट्रीय स्तर पर दिल्ली में कार्यकर्त्ता सम्मेलन का आयोजन करने का कार्यक्रम है। सम्मेलन सभापति श्री सीताराम शर्मा ने नारा दिया है "**मारवाड़ी कोषाध्यक्ष नहीं अध्यक्ष बनें।**"

इस कार्यक्रम में अधिक से अधिक भागीदारी के लिये हमारा सभी मारवाड़ी राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं से निवेदन है कि वे निम्नलिखित "**विवरण पत्र**" भरकर सम्मेलन कार्यालय में भेजने की कृपा करे। पाठक अगर किसी कार्यकर्त्ता से परिचित हो तो उन्हें इसकी सूचना देकर सहयोग प्रदान करें।)

फोटो चिपकायें

विवरण - पत्र

नाम : .....**जन्म तिथि** :.....

पता : .....

.....**पिन कोड**: .....

फोन :.....**मो०**.....**फैक्स**.....**ई-मेल**.....

मूल निवासी: .....**कार्यक्षेत्र**: .....

राजनैतिक जीवन :.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

फार्म भेजने का पता :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन

१५२-बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता-७००००७
फोन नं.-(०३३) २२६८-०३१९

पूर्वोत्तर मारवाड़ी सम्मेलन

मंगलूनिया भवन, हैबरगाँव, नगाँव-782002 (असम)
मोबाईल नं.-94351-65686

मारवाड़ी सामाजिक क्रांति परिषद का सफल प्रयास
जनगणना पुस्तिका से बना एक इतिहास

सिलीगुड़ी लघु भारत का रुप है

-अशोक भट्टाचार्य

मारवाड़ी समाज दूध में शक्कर की तरह है

-सीताराम शर्मा

सिलीगुड़ी। समाज सुधार और समरसता का पर्याय है मारवाड़ी समाज। इस समुदाय के लोग भारत के कोने-कोने में रच-बस गये हैं। दुनियाभर में इस समाज ने अपनी पहचान बनायी है। राष्ट्र की प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है इस समुदाय ने। उक्त बातें **अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष सीताराम शर्मा** ने जनगणना पत्रिका विमोचन समारोह के अवसर पर कही। उन्होंने शिक्षा एवं राजनीतिक सचेतना पर प्रकाश डाला। प्रतिभावान छात्रों को उनके भविष्य निर्माण में हर प्रकार की सहायता देने का आश्वासन भी दिया। उन्होंने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने मताधिकार का प्रयोग अवश्य करना चाहिए।

मारवाड़ी सामाजिक क्रांति परिषद का बहु प्रतिक्षित जनगणना पंजिका का विमोचन समारोह धूम-धाम से संपन्न हुआ। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में नगर विकास मंत्री श्री अशोक भट्टाचार्य, अखिल भारतीय मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सीताराम शर्मा, सांसद श्री दावा नर्बुला, सांसद श्री सूरज पाठक, मेयर प्रो.विकास घोष, स्टेशन कमानडर केप्टन चन्द्रमोली, अखिल

राष्ट्रीय एकता हमारा नारा है, सारा देश प्यारा है।

प्रेरणा स्त्रोत

साधक – भंवरलाल मूंधड़ा

अध्यक्ष

श्री रामकिशन गोयल

उपाध्यक्ष

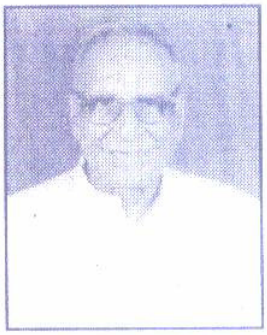

श्री मामचन्द मारोदिया

सचिव

श्री किशन गोयल

कोषाध्यक्ष–सह–सचेतक

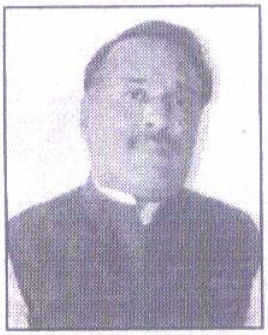

श्री सुरेश कुमार बंसल (लेघांवाला)

भारतीय दधीच ब्रह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री डुंगरमल कांकड़ा, बालमिकी सभा के अध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जाजोड़, प्रणेता श्री भंवरलाल मुंधड़ा उपस्थित थे। कार्यक्रम की शुरूआत में कुमारी अश्लेषा सिंगला ने गणेश वंदना नृत्य के साथ प्रस्तुत की। डॉ. आर. के. अग्रवाल ने श्री अशोक भट्टाचार्य को राजस्थानी पगड़ी पहनाकर स्वागत किया।

मुख्य अतिथि नगर विकास मंत्री श्री अशोक भट्टाचार्य ने कहा कि सिलीगुड़ी में मारवाड़ी समाज हर समाज के साथ मिलजुल कर रहता है। सिलीगुड़ी लघु भारत का रुप है। यह पुस्तक कई जानकारियों से युक्त हैं। परिषद को मेरी शुभकामनाएं हैं। मारवाड़ी सम्मेलन के राष्ट्रीय अध्यक्ष **श्री सीताराम शर्मा** ने कहा कि मारवाड़ी समाज दूध में शक्कर की तरह हर जगह मिल जाता है। सम्मेलन ने शिक्षा के लिए भी छात्रवृत्ति व अन्य योजना हाथ में ली है। सामाजिक कुरीतियों को मिटाने के लिए भी हम कार्य कर रहे हैं सिलीगुड़ी राज्य का दूसरा प्रमुख शहर है। यहां के सामाजिक कार्यों पर हमें गर्व है। **श्री राम किशन गोयल, श्री मंगतूरामजी** बधाई के पात्र हैं। पुस्तक का विमनोचन श्री सीताराम शर्मा ने किया एवं उस समय सह संपादक श्री ओम प्रकार अग्रवाल (सिमी), करन सिंह जैन, सुरेश गोयल, संजय शर्मा उपस्थित थे। श्री शर्मा ने प्रथम पुस्तक माननीय मंत्री अशोक भट्टाचार्य को भेंट की। स्वागत भाषण देते हुए अध्यक्ष श्री राम किशन गोयल ने कहा कि आज हमारा सपना साकार हो गया। जनगणना पंजीका के इस विमोचन समारोह में सभी का स्वागत करता हूं। आगे आप सभी के सहयोग से नए कार्यक्रम बनाये जाएंगे। संस्था के महासचिव **श्री किशन गोयल** ने कहा कि कि आज का दिन एतिहासिक हैं। इस विशाल कार्यक्रम को पूरा करने में बहुत समय लगा। पुस्तिका में यथा संभव हर

संयुक्त परिवार सुखी परिवार।

सिलीगुड़ी मारवाड़ी जनगणना

माननीय अशोक नारायण भट्टाचार्य का सम्मान करते हुए। (दायें) समारोह में उपस्थित समाज के गणमान्य लोग।

सामग्री को संकलित किया गया है फिर भी कुछ त्रुटि रहना संभव है। आप सभी के सुझाव से और आगे कदम बढ़ाए जाएंगे। इस पुस्तक की योजना बनाने वाले श्री भंवरलाल मुंधड़ा ने कहा कि सिलीगुड़ी के लोगों ने विशेष रूप से श्री मंगतुराम चौधरी के निदेशन में जो पुस्तक निकाली है व प्रेरणादायक है।

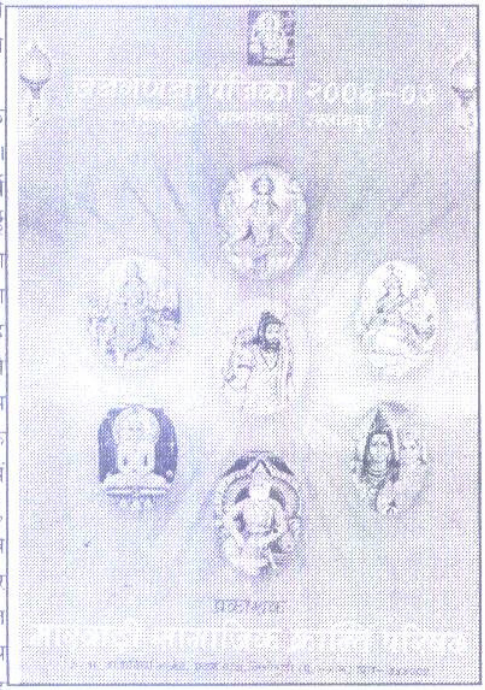

सांसद श्री सूरज पाठक ने कहा कि यह पुस्तिका समाज का दर्पण है। सिलीगुड़ी में समाज बहुत अच्छे कार्य करता है। सभी को इस अवसर पर बधाई देता हूं। सांसद श्री दावा नर्बुला ने कहा कि श्री मंदतुराम चौधरी ने अस्वस्थता के बावजूद इतना बड़ा कार्य किया। यह सामाजिक चेतना का प्रतीक है। मारवाड़ी युवा मंच के पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ओम प्रकाश अग्रवाल ने कहा कि यह पुस्तक सभी की मेहनत का फल है। इसमें समाज की प्रतिभाओं, छात्र-छात्राएं, दिवंगत विभूतियां, संस्थाएँ, मंदिर व समाज रत्नों का समावेश है। सर्वश्री आर के गोयल, सुरेश गोयल, सुरेश बंसल (लेगा वाला), मामचंद मारोदिया, संजय शर्मा सहित सभी ने कार्य किया। यह पुस्तक बहुत उपयोगी जानकारी से परिपूर्ण है।

मेयर प्रो. विकास घोष ने कहा कि सिलीगुड़ी का वातावरण बहुत अच्छा है। मारवाड़ी समाज सेवा कार्य में बराबर आगे रहता है। इस अवसर पर समाज के प्रतिभावान छात्रों को प्रमाण पत्र दिए गए। अन्य वक्ताओं ने भी शुभकामनाएँ प्रस्तुत की। इस्लामपुर से पधारे पूर्व अध्यक्ष **श्री कन्हैयालाल अग्रवाल** ने शुभकामना दी। आज के कार्यक्रम में सर्वश्री पवनगिरी जी महाराज, पार्षद श्री अशोक गोयनका, भगवती डालमिया, पी. के. शाह, ओ. पी. गिदड़ा, नरेश टीबड़ेवाल, सीताराम जाजोदिया, श्री कुलदीप चौधरी, श्री जोगेन्द्र गोयल, श्री मदन मालु, श्री विनोद चौधरी, श्री प्रताप सिंह बेद, श्री चांद अग्रवाल, श्री सांवरमल आलमपुरिया, श्री सज्जन अग्रवाल (सलवर पैलेस), श्री दिलीप दुगड़, श्री देवराज अग्रवाल (टीटुजी), श्री राजू चाचान, श्री राजीव माहेश्वरी, सहित सभी नागरिक उपस्थित थे।

कार्यक्रम सफल बनाने में सर्वश्री सुरेश गोयल, भंवरलाल जैन, ललित सेकसरिया, राजेन्द्र गर्ग, अशोक गोयल, विनोद बंसल, भीम अग्रवाल शर्मा, सुरेश बंसल (लेगा वाला), मुकेश देवसरिया, संपत संचेती, जीवनराम शर्मा, कन्हैयालाल गोयल (माखन भोग), किशन बापोड़िया, मोतीलाल गुप्ता, राजेन्द्र गर्ग, हरिष सिंगला, सुनिल पुगलिया, सहित सभी कार्यकर्ता सक्रिय थे. कार्यक्रम का कुशल संचालन **श्री संजय शर्मा** ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संयोजक **श्री रामावत्तार बेरलिया** ने प्रस्तुत किया। **दिनेश ललबानी** ने कविता प्रस्तुत की।

इस अवसर पर राजस्थान से महाराजा गजसिंह जी के परिवार के सदस्य कुंवर साहब राजकुमार सिंह जी राठौड़, रानी साहिबा संध्या कुमारी जी विशेष रूप से उपस्थित थे। अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, जिसका संचालन **श्रीमती विमला खंडेलवाल** ने किया।

(रिपोर्ट - दिनेश ललवानी, साभार-पूर्वांचल भारत दर्पण, सिलीगुड़ी)

विलास विनाश है।

सिलीगुड़ी मारवाड़ी जनगणना

प्रेरणा स्रोत

साधक श्री भंवरलाल मूंधड़ा का परिचय

13 अगस्त 1931 को राजस्थान में चुरू जिले के छापर कस्बे में श्री मलाचन्द्र एवं श्रीमती लक्ष्मी देवी मूंधड़ा के पुत्र रूप में जन्मे श्री भंवरलाल मूंधड़ा को अणुव्रत आंदोलन जैन तेरापंथ के आचार्य श्री तुलसी ने आपके कार्यों से प्रभावित होकर आपको साधक की उपाधि प्रदान की।

समाज सुधार के क्षेत्र में आप साक्षात क्रांति के दूत हैं। सुजानगढ़ में मुद्दा विरोधी आंदोलन का शुभारम्भ कर आपने ''बड़ा मुद्दा ही दु:खों का कारण'' तथा ''रुपया नारेल में सगाई'', ''गहने सहित बहू'' प्रकाशित करवाई। यह कार्यक्रम समाज सुधार के क्षेत्र में मिसाल बन गया था। आज भी आप दहेज एवं खर्चीली शादियों को बंद करवाने के प्रति प्रयत्नशील हैं। अकाल के समय स्थान-स्थान पर चारागाह खोलने, गौसेवा शिविर चलाने तथा गायों के उपचार हेतु जन सहयोग से बंद गौशालाओं को प्रारम्भ करवाने में आपकी विशिष्ट भूमिका रहीहै। पुष्कर की बंद पड़ी गायत्री गौशाला, सरदारशहर में श्री कन्हैयालाल दुगड़ द्वारा स्थापित गौशाला तथा परबतसर की गौशाला को आपने अथक प्रयास से पुन: शुरू करवाया। गरीब कन्याओं के विवाह में सहयोगी बनना एक पुनीत कार्य मानते हुए आपने अनेक माहेश्वरी, ब्राह्मण, अग्रवाल एवं अन्य जातियों की कन्याओं का विवाह सम्पन्न करवाया है।

जनसहयोग से धन संग्रह कर श्री भंवरलाल मूंधड़ा ने छापर में विशालकाय सर्वोदय भवन, स्टेडियम, गर्ल्स हाईस्कूल, जनहितकारिणी विद्यालय, श्मशान आदि का निर्माण करवाया है। आपके मन में जनहित हेतु अभी बहुत कुछ करने की भावना है। इस उम्र में भी आपका सहास, लगन व कार्यक्षमता प्रशंसनीय एवं प्रेरक है।

अध्यक्ष

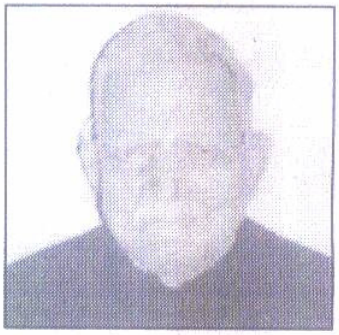

श्री रामकशिन गोयल का अध्यीय भाषण के कुछ अंश

''मारवाड़ी सामाजिक क्रांति परिषद''

सन् 2003 में एक समाज सेवक भंवरलाल जी मुंधड़ा सिलीगुड़ी आये और उन्होंने आकर समाज के कार्यकर्ताओं व गणमान्य व्यक्तियों से भेंट की, फिर कुछ दिनों के बाद रामाकिशन महेश्वरी के साथ मेरे घर पर आये। हमने 1.7.2003 (रथ-यात्रा) के दिन एक आप सभा बुलवाई इस मीटिंग में सत्संग भवन के सत्संगी तथा शहर के अनेक गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे। मिटिंग में अनेक प्रस्ताव/सुझाव आये और यह भी निर्णय हुआ कि जल्दी ही अगली मीटिंग मारवाड़ी पंचायत भवन में बुलाई जायें। किशन गोयल (सचिव) मामनचन्द मारोदिया (जनगणना अध्यक्ष) के पद पर नियुक्त किये गये। उनका सहयोग खालपाड़ा व सेवक रोड के अनेक व्यक्तियों ने किया, गणना प्राय: प्राय: पूरी हो गई। टोटल में 1 लाख से कुछ अधिक बच्चे-युवा व बूढ़े सब मिला के हुए, इस गणना की एक शानदार विवरण-पुस्तिका बन कर तैयार हो गयी। इस पुस्तिका से हमें पता चलेगा कि हमारी कितनी शक्ति है और उस शक्ति का उपयोग हम स्थानीय जनता की सेवा के लिए कैसे कर सकते हैं। मारवाड़ी समाज को भी इस पुस्तक से बहुत लाभ होंगे। आप देख पायेंगे कि समाज में प्रतिभा सम्पन्न लड़के-लड़कियाँ, वकील-डाक्टर, बूढ़े-बूढ़ी कितने हैं जिनको समाज से सेवा की आशा है। गरीबी रेखा से नीचे रहने वाली जरुरतमन्द बहनें जिनकों सिलाई-मशीन देकर उनकी रोटी-रोजी की व्यवस्था की जायें। और आज देश में ज्वलंत समस्या है लड़के-लड़कियों की शादी-विवाह की इस पुस्तका के जरिये अपनी पसंदीदा लड़के-लड़कियों को चिन्हित कर लोगों के सहयोग से उनके अभिभावकों से मिला जा सकता है। प्रत्येक परिवार का विवरण उपलब्ध है। हम चाहते हैं कि इस तरह का क्रांतिकारी काम सारे भारतवर्ष में हो। अंत में मैं अपने सहयोगियों को धन्यवाद देता हूँ जिनमें मुख्य रामगोपल जाजोदिया, डा. आर. के. अग्रवाल, सत्यनारायण अग्रवाल, आर. के. गोयल (जोरथागंज), प्रताप चन्द बैद, महेन्द्र सरोसोदिया, डॉ. मनीष अग्रवाल इत्यादि हैं। भूल के लिए क्षमा प्रार्थी। धन्यवाद।

दहेज, दिखावा, करें पराया।

समाचार पत्रों की एक झलक...

बधाई! बधाई! बधाई!

सीबीएसई की कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम

मारवाड़ी छात्र- छात्रायें अव्वल

(हर्ष डोलिया)

(नेहा मुरारका)

कुशल अग्रवाल

पीयूष अग्रवाल

राहुल बांगड़

प्रशंसा जीवराजका

सीबीएसई की कक्षा 12वीं के परीक्षा परिणाम में मारवाड़ी छात्र- छात्राओं ने पश्चिम बंगाल में प्रथम, द्वितीय स्थान प्राप्त कर समाज को जो गौरव प्रदान किया है इसके लिए सम्मेलन की तरफ से समस्त छात्र-छात्राओं को बधाई प्रेषित।

बिड़ला हाईस्कूल के **हर्ष डोलिया** ने कामर्स में 96.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर पूरे प्रांत में सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। इस छात्र के अलावा लक्ष्मीपत सिंघानिया एकेडमी के **कुशल अग्रवाल** ने साइंस में 95.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर एक नया रिकार्ड कायम किया है। इस छात्र ने मैथ्स में 100 में 100 अंक प्राप्त किये। महादेवी बिड़ला गर्ल्स हायर सेकेंडरी स्कूल की छात्रा **नेहा मुरारका** ने कॉमर्स में 96 प्रतिशत अंक प्राप्त कर लड़कियों में अपना स्थान ऊँचा किया है। इसी स्कूल की एक और छात्रा **प्रशंसा जीवराजका** ने कॉमर्स में 92 प्रतिशत अंक प्राप्त किया। इस छात्रा ने मैथ्स में 99 अंक एकाउंट्स में भी 99 अंक प्राप्त किये। **राहुल बांगड़** ने कॉमर्स में 94.6 प्रतिशत अंक प्राप्त कर कोलकाता में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बिड़ला हाई स्कूल की दूसरे छात्र **पीयूष अग्रवाल** को साइंस में 94 प्रतिशत, अशोका हॉल की **कृति अग्रवाल** को कामर्स में 95.2 प्रतिशत, साइंस में **निशीता टिबड़ेवाल** को 93.4 प्रतिशत मिले।

मातृदिवस के अवसर पर

कन्या भ्रूण हत्या - जघन्य अपराध

श्रीमती सम्पत्ति मोडा

संसार के सभी प्राणियों में श्रेष्ठ प्राणी मानव है। हर मानव को जीवन जीने का पूर्ण अधिकार है, मानव को ही क्यों, सृष्टि के हर प्राणी मात्र को जीवन जीने का पूर्ण रूपेण स्वतन्त्र अधिकार है। मानव ने अपनी बौद्धिक शक्ति द्वारा एक ओर नये नये आयाम स्थापित किये हैं तो दूसरी ओर विध्वंस की कला को भी जन्म दिया है। मशीनों द्वारा भ्रूण-परिक्षण, कन्या है तो उसकी निर्मम हत्या, ये सब मानव द्वारा बनाये गये यन्त्र साधन के कारण है।

नारी आदीशक्ति दुर्गाशक्ति के रूप में अवतरित सृष्टि को जन्मदाती है। सृष्टि नारी के स्नेह-वात्सल्य, ममता के छाँव में विकसित होती है, लेकिन जब इसी ममता वात्सल्य की स्रोतकर्त्ता देवी का नाम हत्या से जुड़ता है तो महान् आश्चर्य होता है, हत्या भी किसकी? किसी अपराधी या पापी की नहीं, अपने ही कोख में पल रहे अपने ही खून की।

इतनी क्रूरता! इतनी निर्दयता ! अपने ही गर्भस्थ शिशु के प्रति नारी इतनी कठोर क्यों? कहने वाले कह सकते हैं कि भ्रूण तो पहली अवस्था में विकसित ही नहीं हो पाता है, इसलिये यह भ्रूण हत्या नहीं है। पर वास्तव में जीवन की शुरूआत तो उसी क्षण से हो चुकी होती है, जिस पर गर्भ में बीजअंकुरित होना शुरू होता है। इसलिये तर्क से पहले ''माँ-जननी'' जैसे शब्दों का ध्यान करें। जिसकी कोई उपमा न दी जा सके, उसका नाम है ''माँ''।

आचार्य विजय यशोवर्म शूरि जी की पंक्तियाँ :-
ऊपर जिसका अंत नहीं उसे आसमां कहते हैं,
जहाँ में जिसका अंत नहीं उसे माँ कहते हैं।

एक बार अपने अंदर से आनेवाली आवाज को सुनने की कोशिश किजिये '' 'माँ मैं तुम्हारा अंश हूँ, संसार में आना चाहती हूँ, तुम्हारा प्रतिबिम्ब, तुम्हारी छाया बनकर। एक माँ अपने अपाहिज बच्चे का पालन-पोषण भी बड़ी ही प्यार से, सर्वस्व न्यौछावर कर करती है, तो फिर ये जघन्य पाप क्यों? जबकि आज अगर हम नजर उठाकर अपने चारों ओर देखें तो कई जगह ऐसा पाया जाता है कि बेटे अपने ही माँ-बाप को अलग कर रहे हैं, उनको अपने पास रखने से हिचकिचाते हैं। किसी ने कहा है—एक माँ सौ बेटे पाल सकती है, सौ बेटे एक माँ-बाप को नहीं।'

माँ-बाप ने जन्म पर बेटों के,
रसगुल्ले बाँटे-लड्डू बाँटे घर-घर बाँटी खुशियाँ
उन्हीं बेटों ने बड़े होकर,
माँ और बाप बाँटे, रौंदी उनकी सारी खुशियाँ।

जनाब बहु तो सभी को चाहिये पर बेटी नहीं। इस तरह तो एक दिन ऐसा आयेगा न बेटी रहेगी ना बहु आयेगी। लिंग अनुपात कम होता ही चला जायेगा। आईये, हम सभी संकल्प लें की कन्या भ्रूण हत्या जैसा जगन्य अपराध न तो खूद करेंगे न ही इस तरह के होने वाले कार्य में भागीदारी बनेंगे।

कन्या भ्रूण हत्या रोकने के लिये निम्नलिखित कार्यक्रम हाथ में लिये जा सकते हैं :-

1. संकल्प :-मैं आज संकल्पन लेती हूँ कि मैं भ्रूण हत्या जैसा जघन्य पाप ना खुद करूँगीं, न ही परोक्ष -अपरोक्ष रूप से इसमें किसी भी प्रकार की भागीदारी निभाऊंगी।

इसी के साथ कन्या भ्रूण हत्या जघन्य अपराध विषय पर पेम्पलेट छपवायें, साथ में एक संकल्प/शपथ फार्म बनवा कर घर-घर जा कर पेम्पलेट वितरण कर फार्म पर हस्ताक्षर करवा कर एकत्रित करें।

2. **कार्यशाला/संगोष्ठी का आयोजन**

विषय : भ्रूण हत्या - कानूनी अपराध
भ्रूण हत्या करवाने पर होने वाले शारीरिक नुकसान
बेटी अभिशाप नहीं बरदान है।

इन सबके लिये अच्छे प्रशिक्षक नियुक्त करें— (1) महिला आयोग अधिकारी (2) स्त्री विशेज्ञ डॉक्क्टर

कार्यशाला के आयोजन के साथ विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन कर सकते हैं, जिससे कार्यशाला में आकर्षण पैदा होगा और कार्यशाला और अधिक प्रभावशाली होगी। प्रतियोगितायें निम्न प्रकार की हो सकती हैं- नाटक एकांकी का प्रस्तुतिकरण- विषय : बेटी का महत्व, भ्रूण हत्या महापाप।

स्लोगन लिखें प्रतियोगिता

विजयी प्रतियोगियों को इनाम द्वारा सम्मानित किया जाये।

3. **साक्षरता अभियान :** निम्न वर्गीय क्षेत्रों में स्त्री चिकित्सा शिविर लगाये जायें साथ में साक्षरता अभियान, उन्हें भ्रूण हत्या पाप, आपराध, नुकसान इत्यादि के बारे में बताया जाये।

4. **प्रचार-प्रसार :** स्थानीय स्तर पर बैनर, पोस्टर इत्यादि लगा सकते हैं। प्रभावशाली पेम्पलेट बाँट सकते हैं।

दूरदर्शन में स्थानीय चैनल पर प्रभावशाली पंक्तियों द्वारा स्क्रोलिंग।

जो भी कार्य इस विषय पर किया जाये, उसका प्रचार-प्रसार स्थानीय प्रेस, मीडिया में पूर्ण रूपेण हो।

कन्या भ्रूण हत्या जैसे महापाप को रोकने के लिये महिलाओं को ही सक्रियता से ठोस कदम उठाने होंगे, अपने ही हाथों से अपने ही खून के रिश्ते को मिटा देना मानवता के लिये कलंक है, तो आइये हृदय परिवर्तन कर इसी कार्य में हम बराबर के सहीयोगी बने, अगर हो सके दूसरों को भी ऐसा करने से रोके। ●

मातृदिवस के अवसर पर

कन्याभ्रूण हत्या और हमारी जिम्मेदारी

श्रीमती सरला अग्रवाल, प्रान्तीय अध्यक्ष : उत्कल प्रादेशिक मारवाड़ी महिला सम्मेलन, बलांगीर

बेटा हो या बेटी दोनों ही माँ की जान है।
पर बेटी से ही माँ की असली पहचान है॥
पिता का गर्व तथा माँ का अभिमान है
बेटी से ही घर में लक्ष्मी और रौनक है।

हम 21वीं शताब्दी में जीने का गर्व करते हैं आधुनिकता का दंभ भरते हैं। ई-मेल और कम्पुटर के युग में दौड़ते हैं। मोवाईल से दुरियाँ को कम करते हैं। इसके बावजूद भी स्त्रियों के बारे में कुछ उच्च शिक्षित लोगों की बाते सुनकर मन व्यथीत हो जाता है। जिसके कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं-

(1) गर्भवती स्त्री को सदैव आशीर्वाद दिया जाता है **'पुत्रवति भव'** सो पुत्र की मां बनो **'सात पुत्रों की माँ बनो'** आदि-आदि।

(2) दो या तीन बेटियां के बाद, उच्च शिक्षित स्त्री गर्भवती होने पर सकुचाती हुई कहती है, क्या करूं? एक बेटा हो जाये तो मेरा भी परिवार पूरा हो जाये।

(3) अच्छे, सभ्य-और शिक्षित परिवार में भी, यह कहते सुना जाता है, हम बहु-बेटियों की कमाई नहीं खाते। बेटे से वंश चलता है। बेटा न हो तो मरने के बाद स्वर्ग नसीब नहीं होता। श्राद्ध और तपन बेटा द्वारा ही होने पर मुक्ति होती है। भौतिक सुखों की उत्तरोत्तर बढ़ती अभिलाषा ने मनुष्यों को इतना अंधा बना दिया है कि, वह आपने ही अजन्मे शिशु की गर्भपात द्वारा हत्या करवा रहा है। रक्षक ही जब भक्षक बन जाये तो कौन बचाये। जननी ही जब जान लेने लगे तो उसे कौन रोकेगा, उस अजन्मी बेटी के प्रति माँ की निर्ममता देख कर आज ऐसा लगता है कि "पुत तो कपूत हो सकते हैं, पर अब माता भी कुमाता होने लगी।" कभी अपना जीवन बचाने के लिये, कभी तलाक के डर से, कभी पुत्र की चाह से वह कभी आने वाली बच्ची पर होने वाले अत्याचारों के भय से वह मजबूर होती रही, मगर किसी की जीवन रक्षा से बढ़कर और क्या मजबूरी हो सकती है? ये बात एक माँ बेटी, और औरत भी समझना छोड़ दे तो यह मानव समाज के लिये एक विडम्बना ही है। इसका दूसरा स्वरूप एक बेबस माँ ने स्वयं अपनी चिता सजाई और अग्निस्नान कर लिया। एक बहु जहां जिन्दा जला दी गई, घटना दो है मगर दोनों के जड़ में स्त्री ही है जलने-जलाने। मरने-मारने की वजह भी कहीं पुत्री के विवाह में असमर्थता या पुत्र न जन्म होने की असमर्थता ही होती है।

मदर टेरेसा ने एक बार कहा था कि यदि हम यह स्वीकार कर ले "एक माँ अपने बच्चों की हत्या कर सकती है" तो क्या वह दूसरों की हत्या नहीं कर सकती?

1984 में कनाट सिटी मिरस्सोरी में नेशनल राईट्स पर लाईफ कन्वेशन में श्रीमती रेराल्स और डॉ. बेनार्ड नायेसन द्वारा बनाई फिल्म "द साईलेन्ट स्क्रीम" (मुक चीख) इस फिल्म की विडियो कैसेट भी उपलब्ध है। यह फिल्म गर्भपात पर बनायी गई एक अल्ट्रासाउंड मुवी का आंखों देखा हाल है। इस मूवी में एक बालिका, जिसकी गर्भ में आयु मात्र 10 सप्ताह है को सक्सन एबर्सन द्वारा समाप्त करने का दिल दहला देने वाला दृश्य है।

स्त्री पुरुष समाज के ही नहीं वरण जीवन के भी पूरक हैं। एक का अस्तित्व दूसरे के बिना अधूरा है। स्त्री पुरुष मिल कर ही सम्पूर्ण को पाते हैं। ये बाते रूढ़ीवादी लोग नहीं समझ पा रहे हैं। ये कटु सत्य है कि पुत्रियों को लेकर, मानव समाज में पूरी तरह मानसिक परिवर्तन की सख्त आवश्यकता है। **कन्या का माप दण्ड जब तक दान, दहेज अथवा दैहिक सौंदर्य होगा तब तक हमारे समाज में परिवर्तन संभव नहीं। आत्मनिर्भर बहु-बेटी जब तक पहली पसंद नहीं बनेगी तब तक स्त्रियों की दशा में सुधार सम्भव नहीं। स्त्री स्वयं एक बेटी, माँ और सास भी है। अपनी कौम को समझने और सवांरने का इससे अच्छा दायित्व और कौन निभा सकता है।**

कन्या भ्रूण हत्या से दहेज हत्या तक एक कारूणिक जीवन यात्रा में महिलाओं की करीब 10 करोड़ जनसंख्या गायब हो गई है और आज भी यह सिलसिला जारी है। हमारा देश बढ़ती आबादी की चिंता के बावजूद महिलाओं की घटती आबादी की चिंता से जूझ रहा है।

जिस दिन यह समाज पितृसतात्मक घेरे से बाहर निकल, महिला के अस्तित्व को अस्वीकार करेगा, महिला को एकदेह नहीं वरण एक इंसान समझेगा, उस दिन 8 मार्च जैसा कोई एक दिन उसके नाम करने की जरूरत महसूस नहीं होगी। और ना ही उस खास दिन उसे सम्मान के साथ साथ कुछ विरोधाभास खबरों से गुजरना होगा। मिडिया ने **8 मार्च को महिला दिवस के रूप में जहां याद किया,** वहां यह भी बताया कि, आज विश्व में महिलाओं की क्या स्थिति है? **शोक के साथ उत्सव का कैसा ये अद्भुत आयोजन!!** नम आंखों से अपनी अजन्मी बच्चियों की बिदाई और उन बच्चियों का अभिनन्दन! जिन्होंने अनेक तुफानों को जेलते हुये अपनी योग्यता का परचम लहराया।

●

मातृदिवस के अवसर पर

कैसे रुके भ्रूण हत्या

**हमारी बहनों ने भ्रूण हत्या की ज्वलंत एवं गंभीर समस्या से निपटने के ढेर सारे उपाय सोचे और सुझायें हैं। अधिकांश उपाय तो तुरन्त क्रियान्वित करने लायक है। प्रस्तुत है हमारी बहनों के विचार।-*सम्पादक*

क्या करें हम ?

1. **धर्म गुरुओं को आगे लाएँ :** धर्माचार्यों को प्रेरित करें कि वे अपने प्रवचनों में कन्या भ्रूण हत्या या समस्त रूप से भ्रूण हत्या को ही धर्म-विरोधी काम बताएं और इसका परिणाम अगले जन्म में भुगतने की बात समझाएँ। उनके प्रवचन स्थलों पर भी भ्रूण हत्या के निषेध वाले पोस्टर लगाने चाहिए। *-सरला अग्रवाल (बालांगीर), ज्योति जोशी (अमलनेर), अरुणा भगनिया (धनबाद), शकुन अग्रवाल (संबलपुर), मंगल राठी (गुलबर्गा), सुमिता अग्रवाल (कटक), राजेश्वरी शर्मा (क्योंझर), डॉ. पूर्णिमा केडिया (राँची), सुमिता माहेश्वरी (तालचेर)।*

2. **हर क्षेत्र के सितारे आगे आएँ :** फिल्मी सितारों, स्टार खिलाड़ियों, बड़े राजनीतिज्ञों एवं समाज सुधारकों के द्वारा इसके विरोध में प्रचार टी. वी. पोस्टर, पत्र-पत्रिकाओं में किया जाए, जैसे पोलियों के लिए किया जा रहा है।

-स्नेहलता चौधरी (सराइकेला)

3. **दिल को छूने वाले पोस्टर एवं नारे :** कन्या भ्रूण हत्या के विरोध में हृदय विदारक और दिल को छू देने वाले नारे एवं पोस्टर सोनोग्राफी केन्द्रों पर लगा देने चाहिए। ताकि गर्भवती नारी ऐसा कदम उठाते समय स्वयं को अपराधी समझे। उपरोक्त पोस्टर सार्वजनिक स्थानों पर भी लागने चाहिए। *-सरला अग्रवाल (बालांगीर)। स्नेहलता चौधरी (सराइकेला)*

4. **गर्भपात से माँ बने रोगी, संतान हो विकलांग :** इस तरह के गर्भपात से नारी के शरीर का अंदरुनी भाग रोगी हो जाता है। भविष्य में या तो संतान ही नहीं होती या विकलांग और दोषपूर्ण होती है और माँ का स्वास्थ्य खराब हो जाता है। कमर दर्द, जोड़ों का दर्द, ये बीमारियां आजीवन लग जाती है। इस बात का प्रचार पोस्टर, एकांकी के माध्यम से जगह-जगह पर हो।

-सरला अग्रवाल (बालांगीर) मंगल राठी (गुलबर्गा), डॉ. पूर्णिमा केडिया (राँची)

5. **हर त्यौहार में कुंआरी बुआ या बहन की मौजूदगी जरूरी :** जगह-जगह यह प्रचार हो कि हमारी संस्कृति के अनुसार हर त्यौहार के आयोजन में कन्या का होना आवश्यक है, अन्यथा व्रत-उपवास एवं त्यौहार का पूर्णफल नहीं मिलेगा, भाईदूज और रक्षाबंधन कैसे मनाएँगे हम ?

-सरला अग्रवाल (बालांगीर), किरण अग्रवाल (कांटाभांजी)

6. **गर्भपात के बाद शुद्धिकरण हो परिवार का :** कन्या भ्रूण हत्या का समाचार मिलते ही समाज के लोग उस परिवार में शोक प्रकट करने जाएं और आम मृत्यु के बाद किये जाने वाली सारी शुद्धीकरण प्रक्रियाओं के लिए बाध्य करें। यदि वह परिवार ऐसा न करें तो उसके यहाँ होनेवाले शुभ कार्यों में समाज के लोग शामिल न हों।

-डॉ. संध्या अग्रवाल (कटक), सुमिता अगरवाल (कटक)

7. **आत्मा की मुक्ति हेतु बेटी के द्वारा एक पिन्डदान अनिवार्य :** अंतिम क्रियाकर्म एवं पिण्डदान के लिए यदि माँ-बाप इच्छा प्रकट करें कि उनकी बेटियों ही ये काम करे, तो बेटियों का महत्व बढ़ेगा। बेटा तो सब कुछ करे ही, लेकिन बेटी के हाथों कम से कम एक बार पिण्डदान मिले बिना आत्मा की मुक्ति संभव ही नहीं, तो तत्काल लोगों को बेटियों का महत्व समझ में आने लगेगा। *संगीता चौधरी (हिंगोली), ज्योति जोशी (अमलनेर), कृष्णा अग्रवाल (पदमपुर), किरण अग्रवाल (कांटाभांजी), डॉ. पूर्णिमा केडिया (राँची)*

8. **दहेज पर रोक, सम्पत्ति में हिस्सेदारी :** लड़कियाँ अपने माँ-बाप की संपत्ति में बराबर के हिस्से की दावेदारी पर जोर दें, तथा दहेज पर एकदम पाबंदी लग जाए, तो लड़की को बोझ समझने की बात खत्म हो सकती है। *-मीना अग्रवाल (हिंगोली)*

9. **जलवा बन्द हो :** लड़के के जन्म पर उत्सव मनाने में खर्च किया जाता है, यदि लड़की के जन्म पर उतनी ही रकम बैंक में ब्याज पर सुरक्षित रख दी जाए, तो लड़की के विवाह के समय उसका इस्तेमाल हो सकेगा। लड़के के जन्म पर जलवा करने की रोक लगे।

-शकुन्तला बंका (अतावीरा), किरण अग्रवाल (कांटाभांजी), सुशीला गुप्ता (रांची)

10. **जातिगत संस्थाएं आगे आयें :** सामाजिक और जातिगत संस्थाओं को पंचायत में, सभा में यह प्रस्ताव पारित कर देना चाहिए कि कन्या भ्रूण हत्या करने वाले परिवार को बहिष्कृत कर दिया जाएगा। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के जाट एवं गुजरों ने इसी तरह का प्रस्ताव पारित किया है। हमें भी विभिन्न मंचों से ऐसा करवा देना चाहिए।

-सरला अग्रवाल (कटक)

मातृदिवस के अवसर पर

11. क्या होगा लैंगिक असंतुलन से : इस बात का भरपूर प्रचार होना चाहिए कि कन्या भ्रूण हत्या के कारण उत्पन्न लैंगिक असंतुलन से समाज में यौन उत्पीड़न, एवं शोषण की घटनाओं में बेहिसाब वृद्धि होगी, अराजकता छा जाएगी-लड़कियाँ और महिलाएँ एकदम असुरक्षित हो जाएँगी-सभ्य समाज जंगल राज्य में बदल जाएगा। *-उर्मिला अग्रवाल (अमलनेर), तारा अग्रवाल (भागलपुर), सरोज सरिया (गोविंदपुर)*

12. जागरुकता कैंप लगाए जायें : जगह-जगह पर नियमित रूप से कैंपों का आयोजन होना चाहिए जिनमें भ्रूण हत्या से माँ के शरीर को होने वाले नुकसान, भविष्य में स्वस्थ संतान न होने की संभावना और अगले जन्म में हत्या के महापाप का फल मिलने की बात का प्रचार हो-पोस्टर, स्लोगन, नृत्य नाटिका, एकांकी भाषणों, वाद विवाद आदि के माध्यम से।

-ज्योति जोशी (अमलनेर), संगीता बंका (आतावीरा)

13. भ्रूण की दर्द भरी छटपटाहट का शाब्दिक चित्रण हो : भ्रूण हत्या कैसे होती है, पूरी प्रक्रिया का वर्णन और गर्भस्थ भ्रूण का टुकड़े-टुकड़े होना, छटपटाना, अपार कष्ट से गुजरना-सभी का शाब्दिक चित्रण हृदय विदारक ढंग से हो-तो इसका प्रभाव अवश्य पड़ेगा। चूहा मारने से भी परहेज करनेवाले लोग भ्रून हत्या शायद इसीलिए करवा लेते हैं क्योंकि वे भ्रूण की छटपटाहट न तो देख पाते हैं न महसूस कर पाते हैं।

-लीलावती तोतला (पाचोरा), रंजू मोदी (अंगुल) स्नेहलता चौधरी (सराइकेला)

14. भ्रूण हत्या पर ही रोक हो जाए : लड़का हो या लड़की, ठीक है दो संतान से ही संतोष करें, यदि दोनों लड़कियाँ हो जाए, क्या हर्ज है। भ्रूण हत्या से बचना है तो मासिक सुरक्षा चक्र के अनुसार संयम रखें। *-लीलावती तोतला (पाचोरा)*

15. नारी संकल्प करे और दृढ़ता से पालन करें : नारी को अपना आत्मविश्वास बढ़ाना होगा, दिल से मानना होगा कि भ्रूण हत्या महापाप है और उसमें उसे किसी भी हालत में भागीदार नहीं बनना हैं। उसे सुष्मिता सेन और नीला गुप्ता के उदाहरण सामने रखने होंगे। नारी ही नारी की हत्यारिन न बने। *-राखी जुनझुनवाला (भागलपुर), संगीता बंका (आलावीरा), कृष्णा अग्रवाल (पदमपुर) सरोज सरिया (गोविंदपुर), रीता केडिया (गिरिडीह), कंगन अग्रवाल (बरपाली), प्रभा सुरेका (भुवनेश्वर), सुशीला गुप्ता (राँची), अंजू अग्रवाल (तालचेर), सूरज गुप्ता (पटना)*

16. वंश किसका, केवल बाप का या केवल मां का : कहते हैं कि वंश चलाने के लिए लड़का चाहिए, क्या अकेला लड़का वंश चला सकता है। वंश चलाने के लिए पराए घर से लड़की लानी पड़ती हैं। कोई भी संतान अकेले पुरुष की नहीं होती-उसमें माँ-बाप दोनों का अंश रहता है, बल्कि माँ तो उसे खून, माँस, मज्जा सब कुछ देती है, तो वंश पुरुष का हुआ या उस माँ रूपी नारी का! अतएव यही बात मूलरूप से मिथ्या है कि वंश लड़कों से ही चलता है-इसका खंडन होना चाहिए।

-कृष्णा अग्रवाल (पदमपुर), अरुणा भगनिया (धनवाद), सुमिला अग्रवाल (कटक), पुष्पालता टांटिया (रांची)

18. हत्या नहीं, पालना घर को सौंप दें : हर गर्भवती महिला के पास जाकर स्वयं सेवी संस्थाओं की महिलाए अनुरोध करें कि यदि कन्या को जन्म देने से उसको या उसके परिवार को परहेज हो, तो भ्रूण हत्या न करें, बल्कि जन्म देकर "पालना घर" में दे दें।

-सरला अग्रवाल (बालांगीर), बीना तुल्सयान (चनपटिया)

बेटा-बेटी दोनों बराबर

"यत्र तार्यस्तु पुज्यन्ते, तत्र रमन्ते देवता"

लेकिन हमारे पुरुष प्रधान समाज में नारी का स्थान दोयम है और आज भी वह किसी न किसी रूप में अन्याय, शोषण, दबाव, अधीनता, हिंसा की शिकार है। परिणाम स्वरूप कन्या-भ्रूण हत्या का प्रमाण बढ़ता गया, और स्त्री-पुरुष जनसंख्या में काफी अंतर आ गया।

सरकार की कठोर कानून व्यवस्था, संस्थानों की कोशिश के बावजूद भी यह समस्या "ज्यों कि त्यों" खड़ी है। ऐसा क्यों? क्योंकि यह समस्या हमने ही शुरू की, अब इसे रोकने की पहल भी हमें ही करनी है।

पहले तो हमें अपनी फिर परिवारवालों की, रिश्तेदारों की मानसिकता बदलनी है। बेटा ही "कुलदीपक" है। इस सोच को, "दहेज प्रथा" को जड़ से मिटाना है। इसलिए हमें बेटा-बेटी को एकसमान मानकर, बेटी को भी बेटे की बराबरी में धार्मिक, सामाजिक, कानूनी तौर पे सभी अधिकार जन्मजात देना है। उदाहरण-अन्तिम क्रियाक्रम तथा पिंडदान विधि बेटियों के हाथों भी किया जाये। बेटी को भी उच्च शिक्षा एवं आत्मनिर्भर बनाएँ। पिता की संपत्ति में हिस्सा दें। और दहेज का लेन-देन बंद कर बेटी की योग्यता को ही धन समझे। इसी के साथ हम नारी भी नारी के प्रति आदर-सहानुभूति रखें।

भ्रूण हत्या रोकने के लिए सरकार को भी हर संभव कोशिश करनी है। भ्रूण हत्या के दोषी डॉक्टरों, अभिभावकों पर कड़ी से कड़ी कारवाई कर उन्हें दंडित करें। औरतों को नौकरी में आरक्षण के साथ सामाजिक सुविधानुसार पोस्टींग दें। इसी तरह हमें....

"नारी के अस्तित्व को करना है जतन।
आओ रोकें भ्रूणहत्या का चलन"।

धन्यवाद, जय हिन्द, जय महाराष्ट्र

-सौ० संगीता संजय चौधरी (अग्रवाल)
हिंगोली 431513

मातृदिवस के अवसर पर

कैसे रुके भ्रूण हत्या : क्या करें सरकार?

1. **स्टिंग ऑपरेशन एवं कड़ी सजा :** हमें कोशिश करनी चाहिए कि भ्रूण हत्या का कुकर्म करने वाले डॉक्टरों को रंगे हाथ पकड़वाएँ और सरकार उनकी डिग्री या प्रैक्टिस करने का लाइसेंस ही रद्द कर दे। पकड़ने के लिए स्टिंग ऑपरेशन की तरह कुछ किया जा सकता है। पकड़ने के बाद डॉक्टर एवं सोनोग्राफी केन्द्र पर कड़ी कार्यवाही हो। *-संगीता चौधरी (हिंगोली), राजश्री अग्रवाल (बौद्ध शाखा), डॉ. संध्या अग्रवाल (कटक), उर्मिला अग्रवाल (अमलनेर), सारिका ओसवाल (अमलनेर), मीना अग्रवाल (हिंगोली), अरूणा कासट (पाचोरा), चन्दनमाला जैन (मुंगेर), अरूणा भगनिया (धनवाद) सरोज सरिया (गोविंदपुर), शकुन अग्रवाल (संबलपुर) मंगल राठी (गुलबर्गा) रुद्र मोदी (अंगुल), स्नेहलता चौधरी (सराइकेला)*
2. **लड़कियों के नाम जमो हो रकम :** बेटी के नाम पर कुछ निश्चित रकम की यू. टी. आई. या अन्य पॉलिसी सरकार दे दे तो बेटी की उच्च शिक्षा एवं विवाह के खर्च का बोझ उसके माँ-बाप पर न होगा, तब वे बेटी का स्वागत करेंगे। *-संगीता चौधरी (हिंगोली)*
3. केवल लड़कियों के माता-पिता सम्मानित हो : केवल बेटियों के माता-पिता को सरकार सम्मानित करे एवं बेटियों के लिए उच्च शिक्षा एवं नौकरी में आरक्षण की व्यवस्था करे। ऐसे में बेटे को लोभ में भ्रूण हत्या से लोग कतरायेंगे। *-संगीता चौधरी (हिंगोली), मीना अग्रवाल (हिंगोली), रेखा अग्रवाल (हिंगोली), शकुन्तला अग्रवाल (मधुपुर), बीना तुलस्यान (चनपटिया), राजश्री अग्रवाल (बौद्ध शाखा), जेयति अग्रवाल (अंगुल), डॉ. पूर्णिमा केडिया (राँची), ज्योति जोशी (अमलनेर)*
4. **अधिक सशक्त न्यायालय :** लोक न्यायालय को अधिक सशक्त एवं कारगर बनाकर दहेज लेनेवालों, भ्रूण हत्या करने-कराने वालों पर त्वरित कार्यवाही की जाए। *-संगीता चौधरी (हिंगोली)*
5. **आयकर में छूट :सरकार कन्याओं को पालन-पोषण के लिए आयकर में विशेष छूट दे उसके विवाह पर होने वाले खर्चे की निश्चित राशि पर आयकर की छूट दे या विवाह के लिए बचत करनेवालों को विशेष सुविधाएँ दें।** *-चंदन माला जैन (मुंगेर)*

समाधान समाज को ही ढूढ़ना है

भ्रूण हत्या एक सामाजिक समस्या है और इसका समाधान भी समाज को ही ढूँढ़ना होगा। सरकार और कानून ऐसी बुराइयों को दूर करने में असफल रहे हैं।

भारतीय समाज यह मानता रहा है कि बेटे से ही नाम चलता है, बेटा ही पितरों का उद्धार करने वाला है और बेटा ही कमाकर घर चलाने वाला तथा वृद्धावस्था में देखभाल करने वाला है। लेकिन गहरायी से जाँचने पर ये सभी धारणाएँ भ्रांत सिद्ध हो जाती हैं।

जनक एवं सुनयना का नाम हम आज भी सीता के कारण जानते हैं। इससे यह प्रमाणित हो जाता है कि सुपुत्री से भी नाम रौशन होता है। अब बेटियाँ भी माता-पिता की अर्थी को कंधा देती हैं, उन्हें मुखाग्नि देती है और पिण्डदान कर पितरों का तर्पण करने की परम्परा कायम कर रही हैं। स्त्रियाँ अब घर चलाने के साथ-साथ अर्थोपार्जन भी कर रही है और वृद्धावस्ता में माँ-बाप की देखभाल भी कर रही है। अभी ऐसे उदाहरण गिने-चुने हैं। आवश्यकता है इन्हें बढ़ावा देकर व्यापक बनाने की।

हमें सबसे पहले तो यह सच्चाई सामने लानी होगी कि गर्भ-परीक्षण और गर्भपात से गर्भाशय पर बुरा प्रभाव पड़ता है, जिसका परिणाम होता है अपंग बच्चे की पैदाइश। दूसरी सच्चाई यह है कि बहुधा पैसों के लालच में चिकित्सक गर्भ-परीक्षण में लड़के को भी लड़की बतलाकर उसका अन्त कर देते हैं। हमें समाज को जागरूक करना होगा कि गर्भ-परीक्षण और गर्भपात करवाने के बदले ईश्वर जो दे उसे सहर्ष स्वीकरें। यह चेतना भी लानी होगी कि पुत्रियों को भी पढ़ा-लिखाकर अपने पाँवों पर खड़े होने योग्य बनाना है। हमें ऐसे परिवारों को पुरस्कृत करना चाहिए, जिनमें कि केवल पुत्री-रत्न हैं। लड़कियों का अनुपात लड़कों की तुलना में दिन-दिन घटता जा रहा है। यदि हम अब भी नहीं चेते, तो जल्द ही ऐसा समय आयेगा कि हमें अपने लड़कों का ब्याह करने के लिए लड़कियां ही नहीं मिलेंगी। अन्त में मैं अपनी कविता की ये दो पंक्तियां आपके सम्मुख रखना चाहती हूँ कि -

बेटी तो वो चिराग है, जो दो घरों को रौशन करती है।
लाज मैके की ससुराल में, औ ससुराल की मैके में रखती है।

आइए, हम सब मिलकर नारा लगायें-यदि भ्रूण हत्या करवायेंगी आप, तो यह होगा महापाप।

-डॉ. पूर्मिमा केडिया 'अन्नपूर्णा'
105, फिकॉन पैलेस, जे. सी. रोड
लालपुर, राँची-1

मातृदिवस के अवसर पर

माँ! मैं भी कुल का नाम रौशन करूँगी

''ममता छिप गयी है आधुनिकता के भेष में
सीताएँ जन्म से पहले ही बलि चढ़ जातीं श्रीराम के देश में''

इन पंक्तियों में सच्चाई की झलक है। इसका कारण हमारा समाज है तथा यहां के रंगीले लोग, दिखावे, रश्मो रिवाज जो सिर्फ पुत्र के लिए ही बनाए हैं, समाज जितने अधिकार लड़का को देता है, यदि ये अधिकार पुत्री को दे तो यह लड़ाई खत्म हो जायेगी। इसमें प्रथम अधिकार (1) दहेज बंद, पुत्र मुखाग्नि, तथा गंगा स्नान पत्नी के साथ ही करें... वरना नहीं। (2) पुत्री जन्म लेते ही कन्या की माता को सरकार राशि चेक प्रदान करे। (3) पुत्र प्राप्ति पर जलवा बंद। संकल्प करें कि कभी भ्रूण हत्या न करेंगे, न करवायेंगे, न करने देंगे।

'गर्भ में बेटी मरवाओगे, तो बहु कहाँ से लाओगे?'

-**किरण अग्रवाल,** कांटाभांजी (उड़ीसा)

माँ मुझे मत मारो

''भ्रूण हत्या'' पर यदि कोई रोक लगा सकता है तो वो हैं हम बहने। माँ बाप लड़का चाहते क्यों हैं? पहला कारण वंश बढ़ाने के लिए, तो क्या अकेला लड़का वंशज दे सकता है उसे परायी लड़की ही लानी होती है जिसके द्वारा कुल दीपक पैदा होता है तो फिर अपनी लड़की ''औलाद'' वंशज क्यों नहीं होगी? लड़की की संतान हर दृष्टि से वंशज कहलाने का अधिकार रखती है।

दूसरी बात बुढ़ापे का सहारा होगा तो आज कितने लड़के मन से माता-पिता की सेवा कर रहे हैं? मनिआर्डर भेज कर अपने आप को कर्जमुक्त कर लेते हैं। बेटी क्यों नहीं बुढ़ापे की लाठी बन सकती? वरन् वह बेटे से मजबूत लाठी साबित होगी। तीसरा मरणोपरांत हमारा पिण्डदान कौन करेगा? बहनों मरने के बाद की दुनिया किसने देखी है? फिर भी अगर जरूरी है तो किस शास्त्र में लिखा है कि नारी, समाज के लिए यह कार्य वर्जित है। बेटियाँ इस तरह के कार्यों को भी अंजाम दे सकती है।

बेटी के जन्म समय ज्यादा मायूसी दादी, नानी, ताई, बुआ आदि के चेहरे पर देखी जाती है यहां पर वो अपनी औरत जात के साथ नाइंसाफी करती है उन्हें चाहिए तहें दिल से नन्हीं परी का स्वागत करें। एक और बात, हमेशा बेटी बाप की लाडली होती है और बेटा माँ का इसका मतलब क्या हुआ हम खुद ही अपनी दुश्मन है। भ्रूण हत्या रोकने के लिए संकल्प करें और साथ ही अपने आसपास के परिवारों की बहनों की धारणा परिवर्तन का प्रयास करें।

-**श्रीमती कृष्णा अग्रवाल,** पदमपुर (उड़ीसा)

हमें भी जीने दो

शास्त्रों में कहा गया है कि जो स्त्री पूर्वजन्म में गर्भ का घात करती है, वह इस जन्म में भी गर्भपात का दु:ख भोगती है। लेकिन बहुत सारे परिवार नवजाति मेहमान के लिंग का परीक्षण कराते हैं। कन्या हुई तो गर्भपात करवा देते हैं। समाज में लिंग का अनुपात विगड़ता जा रहा है वह दिन दूर नहीं जब समाज में बलात्कार और 'बहुपति विवाह' में वृद्धि हो जाएगी।

जागरुकता अभियान चलाया जा रहा है लोगों को समझाने की आवश्यकता है, ताकि उनकी मानसिकता बदले। झोली में जो भी आ जाए उसे परमात्मा का प्रसाद समझकर कबूल कर लेना चाहिए। ऐसे बड़े सितारें को चुनना चाहिए जो टीवी और अन्य प्रचार माध्यमों के द्वारा एक राष्ट्रव्यापी अभियान चलाए, इसके लिए यदि फिल्मी सितारों, क्रिकेट खिलाड़ियों, बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों तथा समाज सुधारकों के द्वारा प्रचार करवाया जाय, तो इसका लोगों पर सकारात्मक असर होगा। प्रशासन को समय-समय पर पोस्टर और वैनर के साथ प्रभात फेरी निकालनी चाहिए, जिसमें स्कूलों के बच्चे तथा महिलाएँ अधिक से अधिक संख्या में शामिल हो। वर्ष का दिन 'पुत्री दिवस' के रूप में मनाना चाहिए।

दोषी डॉक्टरों को कड़ी से कड़ी सजा दी जाए तथा उनका लाइसेंस रद्द कर दिया जाय। जानकारी देने वाले लोगों को पुरस्कृत किया जाए। जिन लोगों ने सिर्फ दो पुत्रियों पर आपरेशन करवा लिया हो उन्हें भी पुरस्कृत करना चाहिए।

सामाजिक मंचों को भी नाटक, कविता, नुक्कड़ नाटक, सेमिनार, पत्रिका, टीवी और अखबार के द्वारा प्रचार करवाना चाहिए।

-**स्नेहलता चौधरी,** सराइकेला

इतनी यातना मत दो माँ!

''माता की कोख में बिलख रहे एक अबोध निरपराध शिशु की शासन और समाज से दुहाई-मेरे ही माता-पिता मुझे अपना वात्सल्य प्रेम औक दुलार देने की बजाए, जीवन दान देने की शपथ लेने वाले इन चिकित्सकों के हाथों मेरे कोमल शरीर को टुकड़े-टुकड़े करके एक भयानक यातनापूर्ण मौत देने की योजना बना रहे हैं।'' किसी समझदार, सक्षम व समर्थ मनुष्य की हत्या को कानून फांसी की सजा देता है। फिर मुझ निर्बल, असहाय, निर्दोष, मूक शिशु की हत्या व इस राक्षसी कृत्य के दोषियों को कानून और समाज क्या सजा देगा? कैसे रुके यह निर्ममता? क्या करे सरकार और हम?

-**बीना तुलस्यान,** चनपटिया

साभार: संकल्प, अखिल भारतीय मारवाड़ी महिला सम्मेलन का मुखपत्र

गोष्ठी - रपट

'ये सफर मेरी पहचान का है'

जीतेन्द्र धीर : कुसुम जैन की कृति 'कविता : दुःख की नदी' पर आयोजित परिचर्चा की रपट

समय से मुठभेड़ के लिए केवल संवेदना काफी नहीं, भाषा भी चाहिये, मासिक संरचना की दृष्टि से कमजोर होने के बावजूद कुसुम जैन की कविताएं समय,समाज और स्वयं से प्रश्न करती हुई बेचैनी और संवेदना से भरपूर हैं। ये विचार है प्रो. अनय के जो वे **कुसुम जैन की कविता पुस्तक, 'कविता : दुःखी की नदी'** पर शब्द संस्कृति मंच पर आयोजित परिचर्चा में, व्यक्त कर रहे थे। डॉ. सुब्रत लाहिड़ी ने कुछ अंशों में इससे असहमति जताते हुए कहा कि इन दिनों हिन्दी में लिखी जा रही अधिकांश कविताएं मन को नहीं छूती। सहज भाषा बोध से रची इनकी कविताओं में संघर्ष के साथ समाजिक सरोकार और प्रेम के प्रति एक सकारात्मक दृष्टिकोण है। कविताएं मन को छूती है, जिसकी वजह भाषा का सहज होना हैं। अनुभवों के जरियें सृजन धर्मिता का जीवित रखना बड़ी बात है।

यह दिलचस्प बहस कवयित्री कुसुम जैन के काव्य संग्रह 'कविता' दुःख की नदी विषयक संगोष्ठी में चल रही थी जिसका आयोजन शब्द संस्कृति मंच में विमल वर्मा की अध्यक्षता में भारतीय भाषा परिषद सभागार में किया गया था।

बहश को आगे बढ़ाते हुए प्रो. विमलेश्वर द्विवेदी ने कहा कि इन कविताओं में अनुभव को ईमानदारी से उतारा गया है। कुसुम जैन अपनी कविताओं में यंत्रणा से जूझती हैं। नारी मुक्ति के प्रश्न पर इनकी विद्रोह मुद्रा 'कत्यायनी' का विद्रोह नहीं है। प्रश्नानुकुलता इन छोटी-छोटी कविताओं को बड़ा बनाती है। कुसुम जैन सकारात्मक सोच की कवियित्री है। डा. तनुजा मजुमदार ने डॉ. लाहिड़ी के वक्तव्य से अपनी सहमति जताते हुए कहा कि कविता वो होनी चाहिये जो दिल को छूये। इस संग्रह की कविताएं औरत के शोषण की बात फिर समाज देश काल को उभारती है और अंत में आशा के प्रकाश तक पाठक को लाती हैं।

बंगला कवि अर्धेन्दु चक्रवर्ती ने कुसुम जैन की कविताओं में भिन्न स्तरों की चर्चा करते हुए कहा कि 'साफ्टटोन' में कठिन बात बड़ी सहजता से कहने की कला कवयित्री के पास है। नीलांजन कुमार ने संग्रह की कविताओं से उद्धरण देते हुए यह स्पष्ट करने का प्रयास किया कि कुसुम जैन की कविताओं में आग और फूल दोनों का सामंजस्य है।

डॉ. 'पुण्डरीक' ने वैदिक ऋषाओं के हवाले से कुसुम जैन की रचनाधर्मिता पर प्रकाश डालते हुए युग चेतना व समय समाज से जुड़ी सार्थक आलोच की कवयित्री बताया। अपने विस्तृत विश्लेषणात्मक परचे में समारोह के अध्यक्ष विमल वर्मा ने विभिन्न स्तरों से संग्रह की कविताओं को व्याख्यायित करते हुए अपनी बात रखी और कहा कि कुसुम जैन की कविताएं स्त्री के अनन्त दुःखों की असमाप्त कहानी है। सिराज खान 'बातिश' ने अपने परचे में बताया कि कविताएं सरल सहज हैं और कुछ अत्यन्त मारक भी। डिजीवन के प्रति कवयित्री की सोच काबिले-तारीफ है।

इस परिचर्चा की शुरूआत कवि नवल की काव्यात्मक प्रतिक्रिया के रूप में लिखी कविता 'कुसुम जैन की कविताओं को पढ़ते हुए' के पाठक से हुई जिसकी कुछ पंक्तियां लोगों के मन को छू गयी—तुम्हारी कविताओं मे दिख जाती है मेरी मां/मेरी पत्नी और मेरी बेटियां..../ तुम्हारी कविता के साथ में भी यात्रा कर रहा हूँ। और ये सफर मेरी पहचान का है।

संचालन करते हुए जितेन्द्र धीर ने समकालीन हिन्दी कविता और आलोचना के परिदृश्य में कोलकता के कवियों के रचनाकार्य के प्रति दिल्ली व बाहर के आलोचकों की उपेक्षा की बात का जिक्र करते हुए इस प्रकार के आयोजनों की जरूरत बतायी। इससे सहमति जताते हुए गीतेश शर्मा ने जोरदार शब्दों में कहा कि यदि हम सब एक मंच पर साथ जुड़े तो कलकत्ता को दिल्ली की स्वीकृति मिलेगी ही।

राजस्थान परिषद ने मनाया राजस्थान दिवस

विभिन्न देशी रियासतों को मिला कर एकीकृत राजस्थान राज्य की 59वीं सालगिरह के अवसर पर राजस्थान परिषद ने बंगाल चेम्बर ऑफ कॉमर्स के सभागार में एक विशेष समारोह का आयोजन किया जिसमें राजस्थान के विभिन्न क्षेत्रों की नागरिक परिषदों के पदाधिकारी एवं समाज के वरिष्ठ नागरिक भारी संख्या में उपस्थित थे।

समारोह का उद्घाटन करते हुए राजस्थान के पूर्व मंत्री एवं वरिष्ठ राजनेता तथा सांसद श्री ललितकिशोर चतुर्वेदी ने राजस्थानियों द्वारा पूरे देश में अपनी-अपनी कर्मभूमि में लोक कल्याण के लिए किये जा रहे कार्यों की सराहना करते हुए उन्हें इस बात की बधाई दी कि वे दूर बैठे हुए भी अपनी जन्मभूमि एवं सांस्कृतिक विरासत से भलीभांति जुड़े हैं तथा वहाँ के विकास में भी अपनी सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं। उन्होंने कहा कि राजस्थान आज विकास के मार्ग में द्रुतगति से बढ़ रहा है। उन्होंने परिषद द्वारा साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में किए गए कार्यों की भी सराहना की। महाकवि श्री कन्हैयालाल सेठिया के समग्र काव्य एवं कविगुरु रवीन्द्रनाथ के गीतों के हिन्दी अनुवाद के प्रकाशन कार्य का उन्होंने अभिनन्दन किया। समारोह में उन्होंने परिषद द्वारा प्रकाशित स्मारिका एवं वरिष्ठ कवि अम्बु शर्मा द्वारा रचित काव्य ग्रन्थ 'कृष्णायन' का भी लोकार्पण किया।

उड़ीसा से राज्यसभा के सदस्य युवा सांसद श्री सुरेन्द्र कुमार लाठ ने कहा कि सैकड़ों वर्षों से अपनी जन्मभूमि से दूर रहते हुए एवं स्थानीय समाज के साथ समरस होने के बावजूद भी हमलोग अपनी संस्कृति अएवं परम्पराओं से आज भी जुड़े हुए हैं। उन्होंने इस बात पर चिंता जताई कि नई पीढ़ी राजस्थानी भाषा से अपना सम्पर्क खोती जा रही है, अत: हमें इस पर ध्यान देना होगा। उन्होंने राजस्थानी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल कराने की माँग को न्यायोचित बताते हुए इसके लिए अपना समर्थन देने का आश्वासन दिया।

विशिष्ट अतिथि एवं युवा उद्योगपति श्री प्रहलाद राय गोयनका ने कहा कि राजस्थानी भाषा हमें व्यवहार में लानी होगी। उन्होंने महाराणा प्रताप की मूर्ति के कार्य में सहयोग देने का आश्वासन दिया। कार्यक्रम के प्रारंभ में परिषद के अध्यक्ष श्री शार्दुलसिंह जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए परिषद की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया ने राजस्थान निर्माण के इतिहास एवं उसकी महान परम्परा पर सविस्तार प्रकाश डालते हुए इतिहास के विषय में और शोध करने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व विधायक श्री सत्यनारायण बजाज ने की। सभा का संचालन श्री रुगलाल सुराणा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन महामंत्री श्री अरुण प्रकाश मल्लावत ने किया।

कार्यक्रम को सफल बनाने में सर्वश्री परशुराम मूँधड़ा, महावीर प्रसाद बजाज, गोविन्द नारायण काकड़ा, सम्पत माणधन्या, अनुराग नोपानी, बंसीधर शर्मा एवं रणजीत भूतोड़िया प्रभृति संलग्न थे।

मारवाड़ी युवा मंच द्वारा शीतल जलशाला प्रारम्भ

मानव मात्र के लिए शीतल जल अमृत तुल्य है। भीषण गर्मी में राह चलते मनुष्य के लिए शीतल जल की महत्ता प्यासा मनुष्य ही जान सकता है। युवा मंच की नगरशाखा ने शीतल जलशाला प्रारम्भ कर तप्त मानव के लिए अमृत उपलब्ध कराने का वन्दनीय कार्य किया है।

अखिल भारतवीय सर्वजन हिताय इसी लक्ष्य को प्राप्त करने उक्त उद्गार आन्ध्र मंच के अध्यक्ष श्री रमेश की हैदराबाद नगर में प्रारम्भ की गई शीतल करते हुए व्यक्त किए। युवा मंच की नगरशाखा बंग ने की। उद्घाटन कन्हैयालाल पाण्डे, महेश बजाज, सुखदेव साथ कई अन्य गणमान्य मारवाड़ी युवा मंच का कार्यक्रम "अमृत धारा" हेतु प्रारम्भ किया गाय है। प्रादेशिक मारवाड़ी युवा कुमार बंग ने युवा मंच शाखा द्वारा बेगम बाजार जलशाला का उद्घाटन कार्यक्रम की अध्यक्षता के अध्यक्ष श्री दामोदरदास समारोह पर सर्वश्री लक्ष्मीनिवास सारडा, शर्मा, श्रीगोपाल बंग के बन्धु भी उपस्थित थे।

'कुरजाँ' का वार्षिकोत्सव

राजस्थानी साहित्य एवं संस्कृति परिषद द्वारा प्रकाशित राजस्थानी-हिन्दी की पत्रिका 'कुरजाँ' ने अपने प्रकाशन का एक वर्ष पूरा करके दूसरे वर्ष में प्रवेश किया है। इस अवसर पर कुरजाँ का वार्षिकोत्सव एवं कुरजाँ के विशेषांक का लोकार्पण समारोह चैम्बर भवन में 3 अप्रैल को आयोजित किया गया। साथ ही राजस्थान दिवस समारोह तथा समाजरत्न चिमनलाल भालोटिया सेवा सम्मान समारोह भी सम्पन्न हुए। जाने-माने अधिवक्ता एवं साहित्यसेवी तथा राजस्थान परिषद - कोलकाता के उपाध्यक्ष श्री जुगलकिशोर जैथलिया समारोह के मुख्य वक्ता थे। आपने बताया कि राजस्थान का इतिहास गरिमामय रहा है तथा राजस्थानी भाषा अति प्राचीन एवं समृद्ध भाषा है। इसकी मान्यता के लिए अभी भी संघर्ष जारी है। उन्होंने जमशेदपुर में साहित्यिक एवं सांस्कृतिक जागरुकता के लिए 'परिषद' के कार्यों की सराहना की और कुरजाँ के प्रकाशन को ऐतिहासिक घटना बताया। आपको तथा पिलानी, राजस्थान से पधारे राजस्थानी वार्षिकी 'बिणजारौ' के सम्पादक डा. नागराज शर्मा को 'कुरजाँ सम्मान' से अलंकृत किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि श्री राजकुमार अग्रवाल को 'समाजरत्न' की मानद उपाधि देकर विशेष रूप से सम्मानित किया गया।

कवि सम्मेलन में श्रीमती अनुराधा द्विवेदी, डा. परमेश्वर गोयल 'काका बिहारी', श्रीनागराज शर्मा, श्री महाबीर जोशी, डा. बच्चन पाठक 'सलिल', श्री प्रेमचंद मधान और डॉ. मनोहर लाल गोयल ने अपनी हिन्दी और राजस्थानी रचनाओं द्वारा श्रोताओं का मन जीत लिया। संचालन श्री हरिशंकर संघी ने किया तथा आयोजन को सफल बनाने में श्री नरेश अग्रवाल, श्री महेश अग्रवाल, श्री बाबूलाल बोहरा, श्रीमती नमिता अग्रवाल, श्रीमती मधु अग्रवाल, श्री रामोतार पुरोहित, श्री अशोक गोयल, श्री बिमल भालोटिया आदि का सक्रिय योगदान रहा। परिषद के महासचिव श्री हरिशंकर संघी की भूमिका सराहनीय रही।

जूनागढ़ (उड़ीसा) : चमेली देवी महिला महाविद्यालय का नव निर्मित भवन उदघाटन

तारीख 30-4-07 को चमेली देवी महिला महाविद्यालय का नव निर्मित भवन का उद्घाटन हुआ। पांच लाख रुपयों से निर्मित भवन को लोकसभा सदस्य श्री विक्रम केशरी देव के प्रतिनिधि श्री भारत भूषण देव ने उद्घाटन किये। दस लाख रुपये से निर्मित एक और भवन को पूर्व मन्त्री श्री बलभद्र माझी उद्घाटन किये। इस अवसर पर कालेज परिचालना कमेटी के सभापति माणिकचन्द्र अग्रवाल के सभापतित्व में अनुष्ठित सभा में श्री जगन्नाथ महन्ती उप जिला पाल, श्री मनोज मेहेर चेयरमैन पंचायत समिति, श्री प्रनेस चन्द बेहरा बि. डि. ओ., श्री सुसान्त कुमार मिश्रा तहसीलदार, सम्मानित अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

कालेज अध्यक्ष श्रीमती प्रियमंजरी षण्डा स्वागत भाषण दिये। सम्पादक श्री भागीरथी सामन्तराय सम्पादकीय विवरणी पाठ किये। अध्यापक बिश्वपति मुण्ड मंच परिचालन किये एवं अतिथियों का परिचय प्रदान किये। विभिन्न प्रतियोगिता मे उत्तीर्ण छात्रियों को पुरस्कार वितरण किया गया। अध्यापिका श्रीमती सस्मिता मुण्ड धन्यवाद दिये। छात्रियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री दामोदर साहू श्री संजय कुमार अग्रवाल, श्री नरेश गर्ग, जूनागढ़ थाना अधिकारी श्री साहू बाबू श्री बेद प्रकाश गोयल, मारवाड़ी महिला समिति अध्यक्षा श्रीमती जामोती देवी अग्रवाल, श्रीमती आशादेवी खेमका, श्रीमती कान्ता देवी बंसल, श्रीमती चन्दा देवी खेमका उपस्थिति थे।

जूनागढ़ के पूर्बतन नगरपाल लायन माणिक चन्द अग्रवाल एवं श्री सन्तोष कुमार अग्रवाल अपने स्वर्गीय माताजी के स्मृति में इस महा विद्यालय की स्थापना 13 अगस्त 1998 में किये थे।

मारवाड़ी युवा मंच : अमृत धारा

मारवाड़ी युवा मंच कांटाबांजी शाखा ने शहर के हृदय स्थल इन्दिरा चौक के निकट ग्रीष्म कालीन सेवा केन्द्र व अमृतधारा के तहत पानी प्याऊ की विशेष व्यवस्था की है। गर्मी से हताहत व्यक्तियों को तुरंत राहत पहुंचाने हेतु मंच की शाखा की तरफ से ठण्डे जल के साथ

नीबू पानी, ग्लूकोज, ओ.आर.एस. घोल तथा अन्य आपातकालीन औषधीय नि:शुल्क दी जा रही है।

सेवा केन्द्र अमृतधारा का शुभारंभ डॉक्टर आर. पी. साहू के कर कमलों से हुआ। उपरोक्त सेवा केन्द्र विशाखापट्टनम् के श्री जमुनालाल खेमका के सहयोग से प्रारम्भ हुआ।

सेवा केन्द्र के संचालन में मारवाड़ी युवा मंच कांटाबांजी शाखा के अध्यक्ष दीपक अग्रवाल, मंत्री चिराग अग्रवाल, कार्यक्रम संयोजक आशीष खेतान ने सक्रिय भागीदारी निभायी।

मारवाड़ी सेवा समिति द्वारा प्रशिक्षण कार्यशाला

रायपुर। हस्तशिल्प एवं ललितकला प्रशिक्षण के क्षेत्र में कार्यरत संस्था मारवाड़ी सेवा समिति द्वारा दिनांक 2 जून से 17 जून तक श्री रामनाथ भीमसेन सभा भवन, समता कालोनी रायपुर में विविध प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया जा रहा है। संस्था की अध्यक्षा श्रीमती प्रज्ञा राठी के अनुसार इस प्रशिक्षण कार्यशाला में राजस्थानी नृत्यकला प्रशिक्षण हेतु उदयपुर राजस्थान से गुरुमाँ श्रीमती शकुंतला पवार एवं ग्वालियर मध्यप्रदेश से प्रख्यात पेपरमेशी शिल्पज्ञ श्री गोविंद सिंह नागवंशी को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है।

श्रीमती राठी ने बताया कि शकुंतलम नृत्य एवं संगीतशाला उदयपुर की संचालिका गुरुमाँ शकुंतला पवार वर्तमान में देश-विदेश में राजस्थानी नृत्यकला का प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कर संस्कृति का प्रचार-प्रसार कर रही हैं। आप देश-विदेश के गणमान्यों द्वारा प्रशस्ति, अलंकरण एवं प्रशंसा प्राप्त की है। आप इस प्रशिक्षण कार्यशाला में विविध राजस्थानी नृत्यों जैसे - गोरबंद, कालबेलिया, खंजरी, चरी, भवाई, घुमर आदि नृत्यों का प्रशिक्षण प्रदान करेंगी। इस कार्यशाला में 6 वर्ष से अधिक उम्र की बच्चियां, युवतियां एवं महिलाएं भाग ले सकेंगी।

कार्यशाला में रायपुर से बाहर से आने वाले प्रशिक्षार्थियों हेतु आवास एवं भोजन की व्यवस्था भी की जा रही है।

अधिक जानकारी हेतु : श्रीमती प्रज्ञा राठी, अध्यक्षा - मारवाड़ी सेवा समिति, 15/136, जवाहरनगर, रायपुर (छ.ग.), दूरभाष-0771-2293656, मो. 098271-75131 एवं 093000-75131 से संपर्क किया जा सकता है।

रामदयाल मस्करा पुस्कृत

बिहार मारवाड़ी प्रादेशिक सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष एवं बिहार चेम्बर ऑफ कॉमर्स के पूर्व उपाध्यक्ष श्री रामदयाल मस्करा को ५वें दादा साहब फाल्के एकेदमी पुरस्कार से गत ३० अप्रैल २००७ को सम्मानित किया गया। बेगुसराय के चितवानी सिनेमा के मालिक श्री मस्करा का बिहार फिल्म उद्योग के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका के लिये बिहार एवं झारखंड मोशन पिकचर्स एसोसियेशन द्वारा सम्मानित किया गया। पूर्व विधायक श्री रघुवंश सिंह द्वारा पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री रामदयाल मस्करा (बायें) श्री रघुबंश सिंह से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

श्री विशुद्धानंद हॉस्पीटल : 91वाँ वार्षिक समारोह

श्री विशुद्धानंद हॉस्पीटल, कोलकाता के 91वाँ वार्षिक समारोह के अवसर पर बोलते हुए श्री हरिप्रसाद बुधिया, मंच पर डॉ. एस. के. शर्मा, श्री साधुराम बंसल, श्री मामराज अग्रवाल, श्री विट्ठलदास मूंधड़ा, श्री एस. के. खेतान।

श्री विशुद्धानंद हॉस्पीटल 100 चिकित्सकों की देखरेख में शहर का कम खर्च में अच्छी सुविधा एवं चिकित्सा प्रदान करती है। श्री पुष्कर लाल केडिया के प्रशासनिक व्यवस्था के अन्तर्गत इस अस्पताल ने काफी प्रतिष्ठा हासिल की है।

महेश बैंक के लाभ में 39% की बढ़ोतरी

हैदराबाद स्थित महेश बैंक के मुख्यालय पर आयोजित उपलब्धियों की जानकारी देते हुए बैंक के चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग। साथ में वाइस चेयरपर्सन श्रीमती पुष्पा बूब, मुख्य कार्यकारी एवं प्रबन्ध निदेशक श्री आर. एस. जाजू तथा महाप्रबंधक श्री उमेश चन्द असावा एवं मधुसूदन राव।

महेश बैंक के कर पूर्व लाभ में इस वर्ष 39% की उल्लेखनीय बढ़ोतरी हुई है और वार्षिक व्यापार 675 करोड़ रुपये पहुंचा। दक्षिण भारत की प्रथम बहुराज्यीय अनुसूचित नगरीय सहकारी बैंक दि ए. पी. महेश को-ऑपरेटिव अर्बन बैंक लिमिटेड ने आज अपनी वार्षिक रपट जारी करते हुए जानकारी दी है कि आर्थिक वर्ष 2005-06 की तुलना में वर्ष 2006-07 में बैंक का लाभ 4.87 करोड़ रुपये से बढ़कर 6.75 करोड़ रुपये हो गया है, जो कि गत वर्ष की तुलना में 39% अधिक है।

बैंक के चेयरमैन श्री रमेश कुमार बंग के अनुसार, बैंक सुदृढ़ता के साथ समग्र विकास की ओर अग्रसर है। यद्यपि अभी भी सहकारी बैंकों के लिए कोई विशेष उत्साहवर्धक परिस्थितियाँ नहीं हैं तथापि बैंक ने प्रत्येक क्षेत्र में उल्लेखनीय परिणाम प्राप्त किये हैं।

Congratulation

Sri Arabind Agrawal has secured 9th rank in Civil Services Examination, 2006. He did his matriculation from Saraswati Sisu Mandir, Kantabanji and degree in commerce from Vocational college of the town. He was Practising C. A. in Raipur and undergoing preparations in Delhi.

He is the eldest son of Sri Binod Kumar Agrawal and Smt. Sita Devi of Kantabanji, Dist. Bolangir (Orissa).

मैढ़ क्षत्रिय समाज

मांगीलाल सोनी राष्ट्रीय अध्यक्ष निर्वाचित

रायपुर। अखिल भारतीय मैढ़ क्षत्रिय समाज के राष्ट्रीय चुनाव सौहार्दपूर्ण वातावरण में सम्पन्न हुए। इसमें राष्ट्रीय अध्यक्ष पद पर मांगीलाल सोनी (कुकरा) रायपुर (छत्तीसगढ़) तथा महामंत्री पद पर बृजलाल उदयपुर (मेवाड़) एवं कोषाध्यक्ष पद पर बहादुरसिंह वर्मा (दिल्ली) निर्वाचित घोषित हुए। निर्वाचन अधिकारी रतनलाल कंडेल थे।

उक्त निर्वाचन कार्यक्रम में निर्वाचित पदाधिकारी को शपथ ग्रहण करवाते हुए। इस आयोजन के मुख्य अतिथि बी. एल. स्वर्णकार (उपायुक्त खान व भू-विज्ञान विभाग भीलवाड़ा) ने समाज के सर्वांगीण विकास हेतु संगठन को मजबूत बनाने की अपील की।

नवनिर्वाचित राष्ट्रीय अध्यक्ष मांगीलाल सोनी ने अपने उद्‌बोधन में कहा कि समाज की पंक्ति में खड़े अंतिम व्यक्ति को लाने से ही समाज की उन्नति संभव है। समाज की उन्नति से ही देश की उन्नति होगी।

समाज को संगठित करने हेतु देश भर में समाज बंधुओं के बीच संगठन के प्रति जागृति लाने हेतु प्रयास किया जायेगा एवं समाज को आर्थिक राजनीतिक एवं सामाजिक उन्नति के लिये समाज बंधुओं को संगठित कर समाज को नई दिशा देने का प्रयास किया जाए एवं समाज को अपना एक बड़ा परिवार समझे। समाज की कुरीतियों को समाप्त कर बालक, बालिकाओं की शिक्षा पर ज्यादा ध्यान देने की बात कही। देश भर से पधारे समाज बंधुओं ने समाज हित में सारगर्भित विचार रखें।

चिन्तन के कुछ क्षण
(प्रसंग : मारवाड़ी समाज)

लेखक :
मोहनलाल तुलस्यान

मूल्य 150/- रु.

पुस्तक प्राप्ति के लिए सम्पर्क करें :

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
152-बी, महात्मा गांधी रोड
कोलकाता-700007

wonder images

Leading solvent printing unit for outdoor & indoor ad.

- Crystal clear digital printing with vutek machine, on Flex, SAV, One way vision, UK Media, Mesh, Lamination, Canvas, etc.
- 40,000 sq ft per day production capacity .
- No compromise in quality.

Wonder images Pvt. Ltd.

2 Brabourne Road, Kolkata - 700 001
Ph: 2225 1862/3/4/5, 9830425990, Fax : 91-33-2225 1866
email : wonder@cal2.vsnl.net.in

REGISTERED Postal Registration
No. SSRM/KOL/WB/RNP-093/2007-09
Date of Publication- 29th May 2007
RNI Regd. No . 2868/68

वैवाहिक आचार संहिता

- मिलनी सबकी ४ रुपया, चांदी छोड़ कागज का रुपया।
- पानी से पापड़ तक अधिकतम २५ व्यंजन का नियम लागू हो।
- विवाह में दोनों पक्ष को मिलाकर यथासंभव सीमित उपस्थिति हो।
- कम खर्च वाले साधारण निमंत्रण पत्र छपने चाहिए।
- सजन-गोठ बन्द हो।
- नेग का कार्यक्रम एक ही होना चाहिए।
- सगाई/विवाह की मिठाई का खर्च वर पक्ष ही वहन करें।
- बैण्ड, सड़क पर नाच, वैवाहिक समारोहों में शराब का उपयोग वर्जित हो।
- रात्रि के विवाह की वनिस्पत दिन के विवाह को प्राथमिकता दी जाए।

अखिल भारतवर्षीय मारवाड़ी सम्मेलन
१५२ बी, महात्मा गांधी रोड, कोलकाता- ७००००७
फोन - २२६८-०३१९

From :
All India Marwari Federation
152B, Mahatma Gandhi Road
Kolkata - 700 007
Ph : 2268 0319

To: